अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में **'लग्न'** का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति तथा व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अत: इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तकों का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। अकेले ग्रह के भिन्न-भिन्न भावों में घूमने से, विभिन्न प्रकार के योगों की सृष्टि होती है। जिसकी प्रमाणिक चर्चा पहली बार आप इस पुस्तक में देख पायेंगे। लग्न बारह है, ग्रह नौ हैं, फलत: 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनीं। प्रत्येक ग्रह की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज तक नहीं हुआ वह है– **'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां? किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलत: ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुन: नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की **द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में कुल 972 × 12 = 11664**

प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेगी। ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्वि-ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होगी। यही कारण है। इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।

एक छोटा सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मी योग'** का ले सकते हैं। क्या गुरु+चंद्र की युति से बना **गजकेसरी योग** सदैव एक-सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! **गजकेसरी योग** का फल किसी भी हालत में सदैव एक-सा नहीं होगा? **गजकेसरी योग** की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी। अकेला **गजकेसरी योग** 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। **गजकेसरी योग** की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकरलग्न'** या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में **गजकेसरी योग** छठे स्थान या आठवें स्थान में हो तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर गुरु छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने परांशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष सॉफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया गया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न', **'कर्कलग्न'**, **'वृषलग्न**, **'तुलालग्न 'सिंहलग्न**, **'कन्यालग्न'**, **'मिथुनलग्न'**, **'मीनलग्न'** और **'धनुलग्न'** 2003-04 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब **'मकरलग्न'** की पुस्तक को पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मकरलग्न में महाराणा प्रताप, गुरु गोलवलकर, सरदार वल्लभभाई पटेल, संजय गांधी, चीनी प्रधानमंत्री माओ-त्से-तुंग, बाला साहेब ठाकरे, विधिवेत्ता रामजेठमलानी, क्वीन एलिजाबेथ, मेधा पाटकर, सुनील गावस्कर, अभिनेता दिलीप कुमार, अशोक कुमार, ब्रिटिश उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, सेठ विद्याभूषण (पूर्व पर्यटन मंत्री) जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। मकरलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। मकरलग्न की स्त्री जातकों पर भी हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री (Zero Degree)से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हों फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह व अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखे। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को ''**कर्कलग्न**'' के अंतर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. हस्तरेखा विभाग—सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनिया में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के सघन अनुसंधान में दो लाख से अधिक हस्तप्रिन्ट के परीक्षण व अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय पर छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित

की है। **'हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार'** नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया। डॉ. द्विवेदी भारत के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने हस्तरेखाओं को कम्प्यूटर पर लाने का अद्‌भुत प्रयास किया है। अभी यह कार्यक्रम 'अंग्रेजी' में है। शीघ्र ही हिन्दी, गुजराती, मराठी व अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद व संशोधन हो रहा है। हस्तरेखा विभाग में अनुभवी विद्वान् दिन-रात काम कर रहे हैं। आप अपना हैण्ड प्रिन्ट भेजकर, उनका फलादेश डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रिन्ट पर प्रश्न भी पूछ सकते हैं। यह विभाग भारत ही नहीं, अपितु विदेशों में अपने ढंग का अनोखा एवं सर्वोच्च कीर्ति प्राप्त करने वाला विभाग होगा। जहां से इस विषय में लोगों को नया प्रकाश व प्रेरणा बराबर मिलती रहेगी।

2. ज्योतिष विभाग–इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाह पत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां 'हैण्ड-प्रिण्ट' देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाएं घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये निःशुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। डॉ. द्विवेदी द्वारा हजारों-लाखों भविष्यवाणिया लोगों के व्यक्तिगत जीवन हेतु की गई जो चमत्कारिक रूप से सत्य हुई हैं। इसके साथ ही अब तक 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां जो समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुईं, समय-चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं। यह एक ऐसा अपूर्ण रिकार्ड है, जो ज्योतिष के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा है। यह एक ऐसा गौरवपूर्ण रिकार्ड है, जिसकी सीमा का लंघन कोई भी दैवज्ञ अब तक नहीं कर पाया है। डॉ. द्विवेदी वैदिक ज्योतिष पर एक अपूर्व सॉफ्टवेयर 'सृष्टि' का निर्माण कर रहे हैं।

3. वास्तु विभाग–हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन' की स्थापना कर रखी है। हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार-विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर

समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु संबंधी दोषों का परिहार जहां तक हो सके बिना तोड़-फोड़ करके कर दिया जाता है। इस विषय में परम पूज्य गुरुदेव डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तकें मार्गदर्शन हेतु काम में ली जा सकती हैं।

4. यंत्र विभाग–विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग–अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारंटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान–संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

7. प्रकाशन विभाग–जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 300 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 250 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1. अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) 1977 से प्रकाशित, 2. चण्डमार्तण्ड पंचांग एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

हमारे कार्यालय की दिन-प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता के कारण नित्यप्रति डाक से अनेकों पत्र आते हैं। बहुत से पत्रों में लम्बी-चौड़ी कहानियां एवं व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन के बारे में बहुत अधिक लिखा होता है, जिनको पढ़ने मात्र में

बहुत-सा कीमती समय नष्ट हो जाता है। अपने बहुमूल्य समय का आदर करना सीखें और दूसरों को भी ऐसा करने दें। कृपा कर स्नेहिल पाठकों से निवेदन है कि कृपया अत्यन्त संक्षिप्त में सार की बात ही लिखा करें। कार्यालय द्वारा केवल उन्हीं पत्रों का जवाब दिया जाता है, जिसके साथ स्पष्ट पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा संलग्न हो। परमपूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क व शंका समाधान के लिए 'अज्ञातदर्शन' अथवा 'श्रीविद्या साधक परिवार' के आजीवन सदस्य का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। कई बार ऐसे मनीऑर्डर भी प्राप्त होते हैं जिनपर पूर्ण संदेश एवं पता लिखा नहीं होता। पाठक लोग प्राय: ऐसा समझते हैं कि हमारा पत्र महत्वपूर्ण एवं कार्यालय में हमारा पत्र जन्मपत्रिकाएं एवं नक्शे सुरक्षित पड़े होंगे एवं पुराने पत्र से हमारा पता देख लेंगे, पर ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि हमारे पास इतनी डाक आती है कि हर तीसरे-चौथे दिन डाक नष्ट करनी पड़ती है। अन्यथा ऑफिस में बैठने को जगह नहीं बच पाती। प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि जितनी बार पत्र-व्यवहार करें, अपना पूरा पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा साथ भेंजे।

8. श्रीविद्या साधक परिवार—प्राय: सम्मोहन, यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सर्वधर्म सद्भाव सेवा ट्रस्ट, अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएसन, लायंस क्लब इंटरनेशनल इत्यादि अनेक संस्थाओं के प्रमुख पद पर प्रतिष्ठापित होकर डॉ. भोजराज द्विवेदी का बहुआयामी व्यस्त व्यक्तित्व, मानव सेवा के अनेक संगठनों व रचनात्मक कार्यों से जुड़ा हुआ है। अत: बिना पूर्व सूचना व स्वीकृति के मिलने की चेष्टा न करें।

विनम्र निवेदन—बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2431883, फैक्स 2637359, मोबाइल-098280 25883 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)—डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके मित्रगण, अनुयायी व भक्तगणों से मिलकर 19 फरवरी, 1993 को एक ऐसे संगठन का गठन किया जिससे ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, वास्तु विज्ञान का प्रचार-प्रसार, जात-पात से रहित मानवमात्र में सर्वधर्म सद्भाव, भाईचारा एवं मैत्रीभाव परस्पर विश्व बंधुत्व स्थापित हो सके, इस उद्देश्य से संस्था का एक भवन बन रहा है।

—आचार्य सोमतीर्थ

ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेद भाष्य भूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/4।
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरह-वगैरह। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है-

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।

यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नी दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्यौतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक '**ओरायन**' के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक '**वैदिक-सम्पत्ति**' में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमें '**वेदांग ज्योतिष**' नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवत: ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र-की अक्षुण्णता कायम है।[5]

वस्तुत: फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, मुम्मई पृ. 90
5. **छन्द: पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते।।–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Veoanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है वह जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृ.1
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृ. 2
3. जातकसार दीप-चंद्रशेखरन् (पृ. 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृ. 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।

यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि यह द्रव्योपार्जन में सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[4] **अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान [redacted] श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं [redacted]ा शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृ. 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यां यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो ज[redacted] है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह-(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
तथा वेदावधीतोऽपिज्योतिशास्त्रंत बिना द्विजाः॥-वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाअम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।



जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

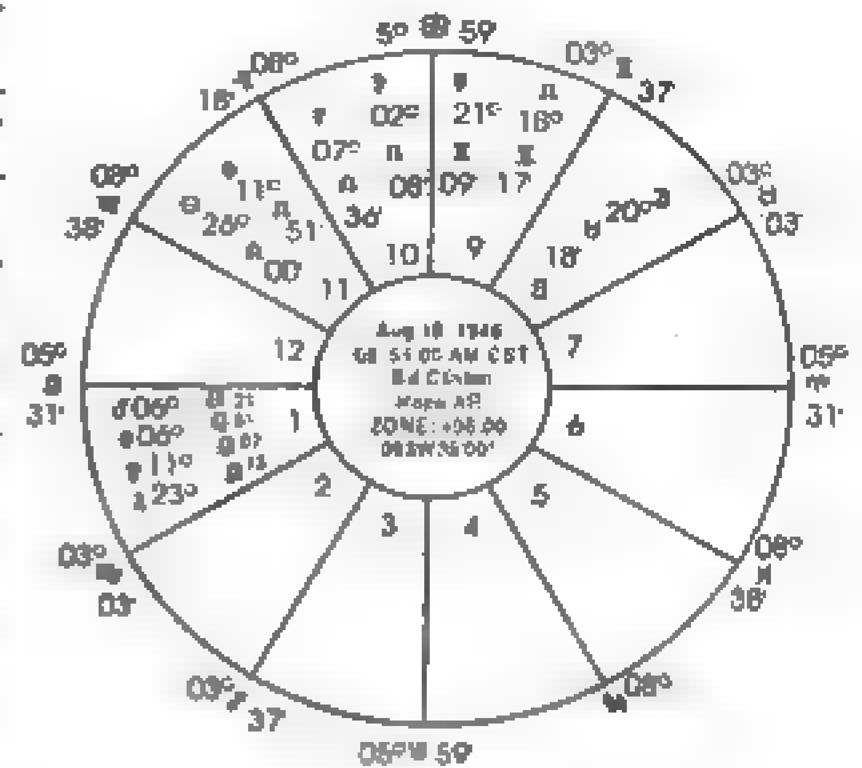
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न।**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

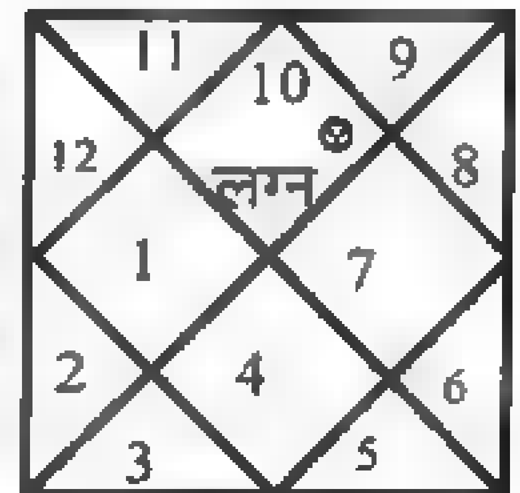
❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।



लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुत: आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का



3.30 से 5.30 A.M.
7.30 से 9.30
5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय
3.30 से 11.30
9.30 से 11.30
11.30 से अर्धरात्रि 1.30
दोपहर 1.30 से 11.30
सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M.
1.30 से 3.30
1.30 से 3.30
3.30 से 5.30
7.30 से 3.30 P.M.

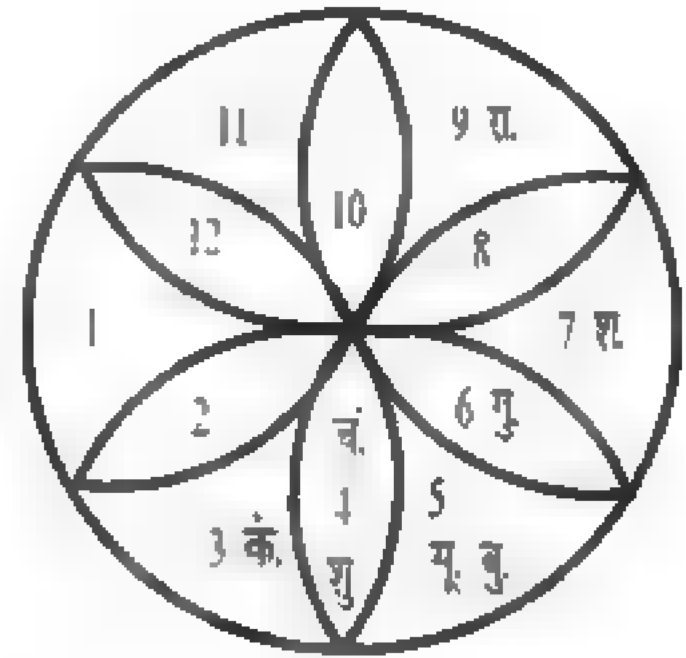
भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसको ऊपरी मध्य घर में जहां सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

11 | 9 रा. | 12 | प्रथम स्थान 10 लग्न | 8 | 1 | 7 श. | 2 | चं. 4 | 6 गु. | 3 के. | शु. | 5 सू. बु.

मिथुन बुध च.शु. सू. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन	कुम्भ
कर्क. गुरु	बंगाल		मकर
सिंह शनि कन्या मं.	तुला राहु		धनु वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सू. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

चन्द्र 3 शुक्र 5 सूर्य 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। **1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगांनि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

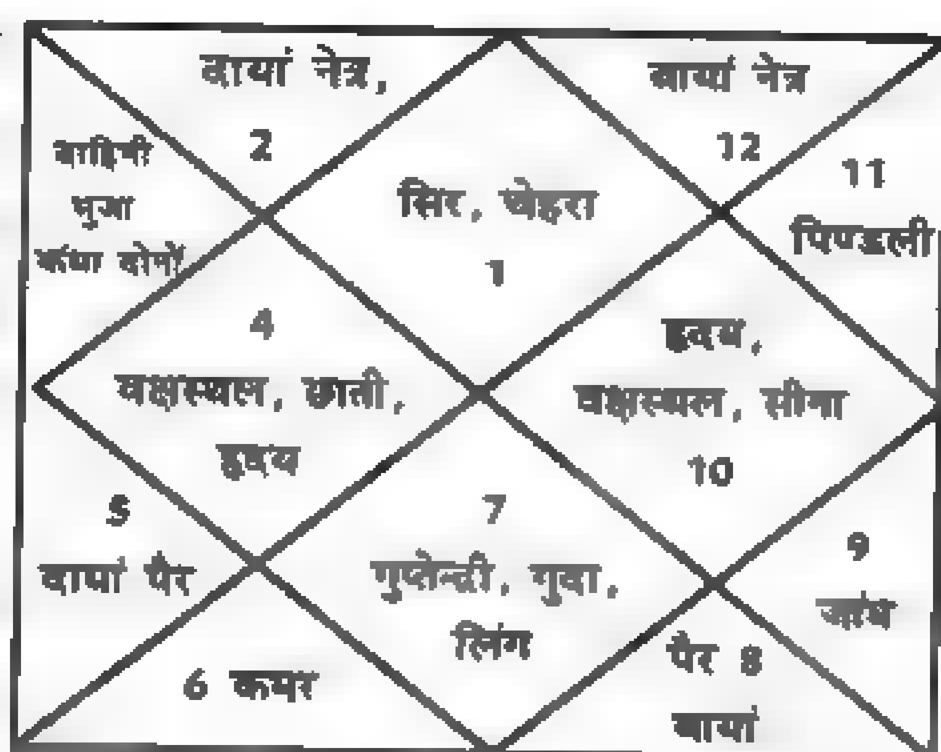
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

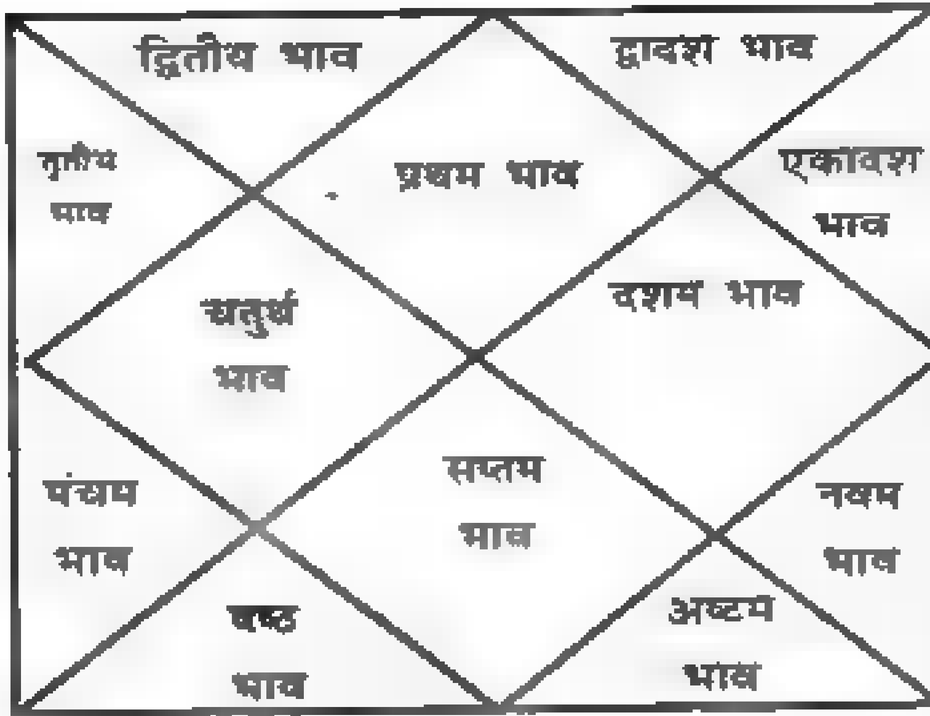
जैसे वृक्ष के बिना फल–पुष्प–पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**''लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्''**।

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

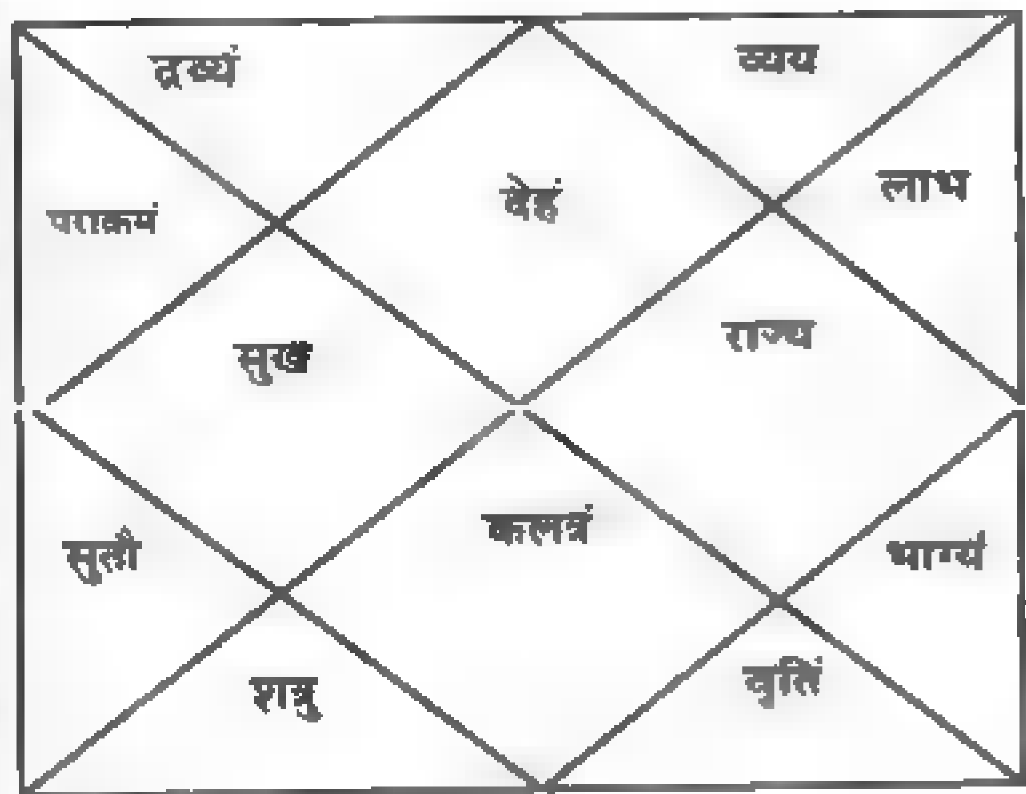


जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **''ज्योतिष और आकृति विज्ञान''** पढ़िए। लग्न पर जिन–जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन–उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता–जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप



पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–



देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्यावनमन्तरैव पराङ्ग सम्यावनपत्र मिथ्या॥

विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं॥8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए॥9॥

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥



मकरलग्न एक परिचय

लग्नेश, धनेश	–	शनि
पराक्रमेश, खर्चेश	–	गुरु
सुखेश, लाभेश	–	मंगल
पंचमेश, राज्येश	–	शुक्र
षष्ठमेश, भाग्येश	–	बुध
सप्तमेश	–	चंद्र
अष्टमेश	–	सूर्य
त्रिकोणाधिपति	–	5–शुक्र, 9–बुध
दुःस्थान के स्वामी	–	6–बुध, 8–सूर्य, 12–गुरु
केन्द्राधिपति	–	1–शनि, 4–मंगल, 7–चंद्र, 10–शुक्र
पणकर के स्वामी	–	2–शनि, 5–शुक्र, 8–सूर्य, 11–मंगल
आपोक्लिम	–	3–मंगल, 6, 9–बुध, 12–गुरु
त्रिकेश	–	6–बुध, 8–सूर्य, 12–गुरु
उपचय के स्वामी	–	3–गुरु, 6–बुध, 10–शुक्र, 11–मंगल
शुभ योग	–	1. शुक्र, 2. बुध
अशुभ योग	–	1. शनि+मंगल, 2. शनि+गुरु, 3. शनि+चंद्र
निष्फल योग	–	इस लग्न में कोई नहीं होता।
सफल योग	–	1. शनि+शुक्र, 2. बुध+शुक्र, 3. शुक्र+मंगल 4. मंगल+बुध, 5. चंद्र+शुक्र
राजयोग कारक	–	शुक्र योगकारक–बुध

20.	**मारकेश**	–	मंगल
21.	**पापफलद**	–	शनि और शुक्र, परमपापी-गुरु

विशेष—मकरलग्न वालों के लिये शनि लग्नेश होने से स्वयं मारक नहीं होता। मंगल इत्यादि पापी ग्रह मारक का काम करेंगे। सूर्य द्वितीय मारकेश का काम कभी-कभी कर देता है।

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मकरलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ।
स्वयं चैव निहन्ता स्यान्मन्दौ भौमादयः परे।।50।।
तल्लक्षणा निहन्तारः कविरेकः सुयोगकृत्।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं विबुधैर्मृगजन्मनः।।51।।

दूसरा पाठ

कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ।
राजयोगकरः साक्षाद् एक एव भृगोः सुतः।।52।।
चन्द्रात्मजेन संयुक्तो विशेषफलदायकः।
स्वयं चैव न हन्ता स्यात् मन्दो भौमादयः परे।।53।।
निहन्तारः पापिनस्ते मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि बुधैरेवं फलानि मगजन्मनः।।54।।

तीसरा पाठ

कुज-जीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ।
स्वयं मन्दो न हन्ता स्याद्घ्नन्ति भौमादयः परे।।55।।
तल्लक्षणसमायुक्ताः कविरेकः सुयोगकृत्।
मृगलग्नोद्भवस्यैवं फलान्यूह्मानि सुरिभिः।।56।।

स्पष्टीकरण

पहला पाठ–मकरलग्न हो तो मंगल, गुरु और चंद्रमा पापफल प्रदान करने वाले होते हैं। कारण मंगल एकादश स्थान का स्वामी होता है, गुरु तृतीय स्थान का स्वामी होता है और चंद्रमा सप्तम स्थान (मारक स्थान) का स्वामी होता है। शुक्र और बुध शुभ फलदायक हैं कारण शुक्र त्रिकोण और दशम केन्द्र का स्वामी होता है और बुध त्रिकोण का स्वामी होता है। शनि और भौमादि पाप फलदायक ग्रह अपनी दशा और अन्तर्दशा में मृत्युप्रद होते हैं।

दूसरा पाठ–मकरलग्न हो तो मंगल, गुरु और चंद्रमा अशुभ फल देते हैं। शुक्र और बुध शुभ फल देते हैं। अकेला शुक्र राजयोगकारक होता है। बुध शुक्र योग हो तो विशेष फलदायक होता है। शनि स्वयं मारक नहीं बनता। मंगल आदि करके अशुभ ग्रह मारक लक्षणों से युक्त हों तो मारक बनते हैं। मकर लग्न में जन्म हो तो ज्ञातों ने इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना।

तीसरा पाठ–मकरलग्न हो तो मंगल, गुरु और चंद्रमा पाप फलप्रद होते हैं। बुध और शुक्र शुभ फलदायक होते हैं। शनि मारक होने पर भी स्वयं मारक नहीं बनता। मंगल, गुरु, चंद्रमा मारक लक्षणों से युक्त हों तो मारक बनते हैं।

शुक्र अकेला सुयोग करने वाला होता है, मंगल चतुर्थेश और एकादशेश, गुरु तृतीयेश और व्ययेश और चंद्रमा सप्तम (मारक) केन्द्र का बलवान मारक स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदायक है। शुक्र दशमेश (याने केन्द्र का) और पंचमेश (त्रिकोण) होने से अकेला राजयोग कारक बनता है। इस शुक्र के साथ बुध का योग हो तो उत्तम राजयोग होगा, कारण बुध षष्ठेश होने पर भी नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से बुध-शुक्र योग श्रेष्ठ प्रकार का राजयोग करने वाला है। शनि स्वयं लग्नेश होकर द्वितीय स्थान का स्वामी है। फिर भी मारकेश होने पर मारक नहीं बनता। मारक शनि स्वयं लग्नेश है। मंगल आदि पाप ग्रह मारक लक्षणों से युक्त हों तो मारक बनते हैं। यहां पर रवि को बिल्कुल नहीं लिया है कारण रवि अष्टम स्थान का स्वामी होकर उसे अष्टमेश होने का दोष नहीं होता। चंद्रमा सप्तम (मारक स्थान) और केन्द्र का स्वामी होने से उसे अल्पदोष है।

मकरलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–शुक्र स्वयं शुभ ग्रह है वह पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ है और दशम स्थान का अधिपति होने से प्रबल दूषित होता है। परन्तु बुध के साथ नवम स्थानाधिपत्य के साहचर्य योग के कारण वह शुभ बनता है और शुभ फल देता है।

2. **शुभ योग**–बुध स्वयं शुभ ग्रह है और नवम (त्रिकोण स्थान) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होता है परन्तु षष्ठ स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ होता है। उससे शुक्र के साथ स्थानाधिपत्य साहचर्य के योग के कारण वह शुभ होता है और शुभ फल देता है।

मकरलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**–मंगल पाप ग्रह है। वह चतुर्थ केन्द्र स्थान का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार शुभ होता है परन्तु एकादश स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।
2. **अशुभ योग**–गुरु स्वयं शुभ ग्रह है परन्तु वह तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है। गुरु व्यय स्थान का भी स्वामी होने से अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।
3. **अशुभ योग**–चंद्रमा शुभ ग्रह है। वह सप्तम (मारक स्थान) स्थान का अधिपति है और केन्द्राधिपत्य दोष के कारण श्लोक 11 के अनुसार स्वल्प दूषित होता है इसलिए वह अशुभ माना गया है और अशुभ फल देता है।
4. **अशुभ योग**–शनि स्वयं पाप ग्रह है और वह द्वितीय (मारक) स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला होता है।

मकरलग्न के लिए निष्फल योग

यह एक ऐसी कुण्डली है जिसमें निष्फल योग नहीं बनता।

मकरलग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र अकेला राजयोग करने वाला है, 2. शुक्र-शनि, 3. बुध-शुक्र, श्रेष्ठ योग श्लोक 20 के अनुसार, 4. शुक्र-मंगल (सदोष), 5. बुध-शनि (सदोष), 6. चंद्र-बुध (सदोष), 7. चंद्र-शुक्र (सदोष) चंद्रमा दोष युक्त है, 8. मंगल-बुध (कनिष्ठ) कारक मंगल एकादशेश होने से दूषित है और बुध षष्ठेश होने से दूषित है। दोनों दूषित होने से निकृष्ट योग होता है।

❑❑❑

मकरलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	मकर
2.	लग्न चिह्न	–	मगरमच्छ
3.	लग्न स्वामी	–	शनि
4.	लग्न तत्त्व	–	पृथ्वी तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	चर
6.	लग्न दिशा	–	दक्षिण
7.	लग्न लिंग व गुण	–	स्त्री, तमोगुणी
8.	लग्न जाति	–	वैश्य
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	सौम्य स्वभाव, वात प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	घुटना (टखने)
11.	जीवन रत्न	–	नीलम
12.	अनुकूल रंग	–	नीला, आसमानी, काला
13.	शुभ दिवस	–	शनिवार
14.	अनुकूल देवता	–	शनिदेव
15.	व्रत, उपवास	–	शनिवार
16.	अनुकूल अंक	–	आठ
17.	अनुकूल तारीखें	–	8/17/26
18.	मित्र लग्न	–	कुंभ
19.	शत्रु लग्न	–	सिंह
20.	व्यक्तित्व	–	परोपकारी, दया का अवतार, प्रशासक

21.	**सकारात्मक तथ्य**	–	व्यावहारिक धरातल पर चलने वाला कठोर परिश्रमी, सही सलाह देने वाला
22.	**नकारात्मक तथ्य**	–	संदेहास्पद प्रवृत्ति, कठिनता से मानने वाला



मकरलग्न के स्वामी शनि का वैदिक स्वरूप

नवग्रहों के वैदिक मंत्रों एवं कर्मकाण्ड में शनि संबंधित जो मंत्र प्रयुक्त होता है। वह निम्न है–

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये

शंय्योरभि स्रवन्तु नः।

–ऋग्वेद10/9/4, यजुर्वेद 36/12

अर्थात् देदीप्यमान जल (जल रूप शनि देव) हमारे पान के लिए सुखरूप हों तथा रोगों का नाश करें। यहां शनि को जल स्वरूप कहा गया है। जल सूर्य से ही उत्पन्न हुआ अतः वह सूर्य पुत्र है। इसीलिए शनि को सम्भवतः सूर्य पुत्र कहा गया है। पञ्चविंशति ब्राह्मण 24/8/6 से शनिस्तु सौरः कहा गया है।

शम् का अर्थ पाप नाशक देवता के रूप में भी किया जाता है। 'शं', मतलब होता है कल्याणकारी, शान्ति प्रदान करने वाला ग्रह। **'शनि शमयते पापम्'** शनि ग्रह हमारे पापों का शमन करता है। पापों का नाश करता है। इसलिए इसे शनि कहा गया है।

अर्थर्ववेद 19/9/7 में शनि ग्रह की प्रार्थना इस प्रकार है–

शं नो मित्र शं वरुणः शं विवस्वान् शमन्तकः।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शन्नो दिविचरा ग्रहाः॥

अर्थात् मित्र, वरुण, सूर्य, अन्तक (शनि), पृथिवी और अन्तरिक्ष में होने वाले उत्पाद और आकाश में विचरण करने वाले ग्रह हमारे लिए शन्तिप्रद हों।

अथर्ववेद के इसी काण्ड के एक मंत्र में नव ग्रहों का उल्लेख इस प्रकार से गूढ़ात्मक भाषा में मिलता है। मंत्र है–

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।

शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः॥

–(अथर्ववेद 19/9/10)

इसमें (चांद्रमसाः) चंद्रमा, बुध, आदित्य अर्थात् सूर्य, राहु, मृत्यु अर्थात् शनि, केतु, रुद्र से मंगल तथा तिग्मतेजसः से गुरु ग्रह का अर्थ निकलता है।

शनि के अनेक नामों में से 'मृत्यु' यमाग्रज, शनैश्नद, मन्द, सौरि, छायासुत, तरणितनय, महिषवाहन, खंज, सूर्य सुमन, असित, पंगु, दास, कृष्ण अश्वरोही, नीलकाय, क्रूर, कृशांग, कपिलाक्ष, कोण, रविपुत्र, नीलांजन, गिद्धवाहन, वगैरह है। अंग्रेजी में सैटर्न तथा उर्दू-फारसी में गृदुल या कोद्वान संस्कृत में असति श्यामलांग, कालदृष्टि, शितिकण्ठ, शमीपुष्पप्रियः नीलश्छाया, रविनन्दन कहा गया है।

❑❑❑

मकरलग्न के स्वामी शनि का पौराणिक स्वरूप

शनैश्चर की शरीर-कान्ति इन्द्र नीलमणि के समान है। इनके सिर पर स्वर्णमुकुट, गले में माला और शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित हैं। ये गीध पर सवार रहते हैं। यह हाथों में क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।

शनि भगवान् सूर्य तथा छाया (सुवंर्णा) के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते हैं। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्म पुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी है--बचपन से शनि देवता भगवान श्री कृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या से इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुंची, पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न थे। इन्हें बाह्य संसार की सुधि ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गयी। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसीलिए उसने क्रुद्ध होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायेगा। ध्यान टूटने पर शनि ने अपनी पत्नी को मनाया। पत्नी को भी अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किन्तु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसमें न थी, तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे। क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि इनके द्वारा किसी को अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी-शंकट भेदन कर दे तो पृथ्वी पर बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ जाये और प्राणियों का बचना ही कठिन हो जाये। शनि ग्रह जब रोहिणी का भेदन कर बढ़ जाता है, तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषियों ने महाराज दशरथ को बताया कि यदि शनि का योग आ जायेगा तो प्रजा अन्न-जल के बिना तड़प-तड़प कर मर जायेगी। प्रजा को इस कष्ट से बचाने के लिए महाराज दशरथ अपने रथ पर

सवार होकर नक्षत्र मण्डल में पहुंचे। पहले तो महाराज दशरथ ने शनि देवता को नित्य की भांति प्रणाम किया और बाद में क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उन पर संहारस्त्र का संधान किया। शनि देवता महाराज की कर्त्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और उनसे वर मांगने के लिए कहा। शनि देव की कृपा देखकर महाराज को रोमांच आ गया। उन्होंने रथ में धनुष डाल दिया और उनकी पूजा की। उसके बाद सरस्वती तथा गणेश का ध्यान कर स्त्रोत की रचना की। इस स्तुति से शनि देवता संतुष्ट हो गये तथा बाद में महाराज दशरथ ने वर मांगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शंकट-भेदन न करें। व भगवन् देवता, मानव, पशु-पक्षी, किसी को आप कष्ट न दें। शनि देवता ने एक शर्त के साथ यह वरदान भी दे दिया शर्त यह थी कि यदि किसी की कुण्डली या गोचर में मृत्यु स्थान, जन्म स्थान अथवा चतुर्थ स्थान में मैं रहूं, तब मैं उसे मृत्यु का कष्ट दे सकता हूं किंतु यदि वह मेरी प्रतिमा की पूजा करेगा या तुम्हारे द्वारा किये गये स्रोत्र पाठ का पाठन करेगा तो उसे मैं कभी पीड़ा नहीं दूंगा।

शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गिद्ध तथा रथ लोहे का बना हुआ है। यह एक-एक राशि में तीस-तीस महीने रहते हैं। यह मकर और कुंभ राशि का स्वामी है तथा इनकी महादशा 11 वर्ष की होती है। इनकी शांति के लिए मृत्युजंय जप, नीलम-धारण तथा ब्राह्मण को तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, काली, गौ, जूता, कस्तूरी और स्वर्ण का दान देना चाहिए।

इसके जप के लिए वैदिक मंत्र-

'ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शय्योरभि स्रवन्तु नः॥'

पौराणिक मंत्र-

नीलाअन्चनसमाभांस रविपुत्र यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामी शनैश्चरम्॥

बीज मंत्र-

'ओ३ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।'

सामान्य मंत्र-

'ओ३म् शं शनैश्चराय नमः।'

इनमें किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा कुल संख्या 23,000 होनी चाहिए।

उत्पत्ति–सभी पुराणों में शनि की उत्पत्ति छाया के गर्भ से व सूर्य के पुत्र के रूप में प्रदर्शित की गई है। आदि देव त्रयी (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) में भगवान शंकर ने सृष्टि के नियमन व उसे अनुशासित करने हेतु गणों का जब प्रादुर्भाव किया तब भगवान भास्कर की एक पत्नी छाया के गर्भ से 9 पुत्रों ने जन्म लिया। उसमें शनि व यम ये भयोग्तपादक दैवी शक्तियों के रूप में प्रकट हुये। शनि बड़े पुत्र हैं यम इनके अनुज हैं। सृष्टि को दण्डित करने का काम शनि और संहार का काम यम ने लिया। दोनों ही शिव की सेवा में दत्तचित्त होने से शिवोपासना से नियंत्रित रहते हैं। ये दोनों कार्य शिवशक्ति से ही इन्हें प्राप्त हैं।

गाथाएं–शनि के बारे में अनेक गाथाएं व किंवदन्तियां प्रचलित हैं। 1. शनि एवं हरिशचन्द्र 2. शनि एवं दशरथ, 3. शनि एवं विक्रमादित्य, 4. शनि एवं नल, 5. शनि एवं पिप्लाद मुनि, 6. शनि एवं श्री हनुमान 7. शनि एवं पाण्डेय, 8. शनि व शंकर का युद्ध। अलग-अलग पुराणों में अन्य भी भिन्न-भिन्न गाथाएं दृष्टिगोचर होती हैं।

पुराणों की कथाओं से मन्तव्य–प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शारीरिक, कष्ट, अर्थहीनता, मानहानि, काम में रुकावटें, पलायन, निष्कासन, कभी कारावास, दरिद्रता, विनम्र शत्रुभय रोग आदि दु:खद स्थितियां आती हैं, यह ध्रुव सत्य है। इनका निवारणकर्ता भी है और इसके कारण शनि का हाथ किसी न किसी रूप में रहता है। इसकी प्रसन्नता व शुभ ग्रह संबंध से वैभव, ऐश्वर्य और धन धान्य से भी समृद्धि आती है। अत: इन कथाओं का ज्यादातर मन्तव्य है जगत् में अचानक आई आपत्तियों का निराकरण और जीवन को सुव्यवस्थित करना है।

जगत् में मानव के जीवन में सच्चे और झूठे का भेद समझाने की शक्ति यह शनि का विशेष गुण है। क्योंकि विपत्ति, कष्ट और निर्धनता ये सबसे बड़े गुरु व शिक्षक हैं। जब तक शनि की सीमा से प्राणी बाहर नहीं होता संसार में उन्नति संभव नहीं है।

शनि दृष्टि–पुराणों में इसकी दृष्टि भयावह है। ऐसे वर्णन मिलते हैं। इसकी दृष्टि अपने घर से तीसरे, सातवें और दसवें स्थान पर पूर्ण मानी गई है। वैसे एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद, दृष्टियां भी काम पूर्णतया करती हैं। शनि जी की गाथाओं में आता है, ''मेरी दृष्टि बुरी है, राजा को पूजा का करूं अकाजा''।

आचार्य वराह मिहिर ने तो शनैश्चराध्याय लिखा है। उसमें शनि विषमयी दृष्टि का वर्णन है। 1. पिता सूर्य पर दृष्टि पर पड़ी तो कुष्ठ रोग हो गया। 2. माता पार्वती के पुत्र पर पड़ी तो पुत्र मस्तक कट गया जिससे गज मुख का जन्म हुआ। 3. सूर्य के सारथी पर पड़ी तो वह पंगु हो गया तथा उसके घोड़े अंधे हो गये। ऐसी अनेक

कथाएं दृष्टि के संबंध में विख्यात हैं। इसका कारण ब्रह्म 'वैवर्तपुराण' में इनकी पत्नी का श्राप है। तब से शनि प्राय: अद्योदृष्टि से व्यवहार करते है। शनि को पुराणों में विष्णु भक्त बताया गया है। अत: इनकी शक्ति से कृपा दृष्टि लोगों को मालामाल कर देती है। शनि को धनप्रदाता ग्रह माना गया है। यह आनंद व सुख सर्जक दृष्टि भी शुभ संबंध से देते हैं।

शनि में त्यागमयी प्रवृत्ति होने से त्यागी, वैरागी व आध्यात्मिक लोग शनि प्रभाव से पूर्ण पाये जाते हैं। अत: यह केवल दु:ख ही नहीं सुख का सर्जक भी है। शनि जहां बैठता है वहां सुख करता है और जहां देखता है बिगाड़ करता है। यह एकान्त प्रिय है सदा उदासीन रहता है।

शनि पनौती–शनि चक्र में यह सबसे दूर का ग्रह है। इसकी एक राशि में परिक्रमा 29 वर्ष 5 मास 27 दिन 5 घटी में पूर्ण होती है। इसकी मध्यम गति 2 कला, 1 विकला, दैनिक गति 3 से 6 कला तक होती है। दक्षिण ओर 2 अंश 49 कला रहता है। यह 140 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होते समय और मार्गी होते समय 5 दिन सम्मित रहता है। यह बहुत चमकीला तथा प्रकाशमान नहीं है। इसकी गति मंद है। इसकी पनोती ढ़ाई वर्ष की है। 30 मास में एक राशि बदलता है।

शनि का रंग–मत्स्य पुराण में कृष्णवर्णी शनि को नीलात्जनसम का वर्णन किया गया है। मनोविज्ञान के आधार पर नीला रंग बल, पौरुष और वीर भाव का प्रतीक है। हमारे सिर पर विस्तृत आकाश नील वर्ण है। अत: शनि नीले रंग का होता है। नीला रंग सहिष्णुता का प्रतीक है। यह सर्वव्यापक रंग होने से नीले रंग वाले पौरुष के प्रतीक होते हैं। यह नाटा भी है और कहीं लम्बा कद भी मिलता है। अत: नीलकण्ठ शिव शनि के आराध्य देव हैं। शिव भक्ति से शनि प्रसन्न होते हैं।

शनि का बलवत्ता–इसके मित्र ग्रह बुध, राहु, शुक्र हैं। समग्रह गुरु है। शत्रु सूर्य, चंद्र, मंगल है। दशम में शनि कारक है। षष्ठ व आठवें द्वादश का कारक है। तुला, मकर व कुंभ राशि में, स्त्रियों के स्थान में, विषुवृत के दक्षिण अयन में, द्रेषाण में, स्वगृह में, शनिवार को, अपनी दिशा में, दिन के अंत में राशि के अंत भाग में, युद्ध समय में, कृष्णपक्ष में वक्री होने के समय किसी भी स्थान में शनि बलवान होता है। यह मंगल से दूषित होता है। शिशिर इसकी प्रिय ऋतु है। शनि मूल त्रिकोण कुंभ शनि का उच्च तुला के 20 अंश तक। शनि का मेष में नीच का स्वगृह मकर और कुंभ है। वृषभ व तुला लग्नों में यह प्रधान ग्रह है।

पश्चिम दिशा में इसका वास है। 12वें भाव में शनि हर्षबली और 7वें में दिग्बली होता है।

रोगों का कारकतत्त्व–दांत, दाहिना कान, चौथे दिन का बुखार, शीत ज्वर,

कोढ़ रक्तपित्त क्षय, दाद-फोड़े, कामला, अभ्रगवायु, कम्प, निरर्थक भय, पागलपन, जलोदर, घुटनों के रोग, सन्धिवात, अतिरक्तस्राव, हड्डी टूटना, लकवा, स्नायु दौर्बल्य, गुप्तेन्द्रिय रोग, व्यसन, गूंगापन, पसीने की दुर्गंध के रोग, हाथी पांव व्यसन होते हैं।

अन्य कारकतत्त्व—बैंक, ब्याज, धीरण-धारण का धंधा, कारखानें, मशीनरी के कार्य, आध्यात्म चिंतन, भूगर्भ, मिल मालिक, भागीदारी, प्रेस, कोयला, कंपनियां, कालेधन, खदानें, बीमा, लोहे की चीजें, तेल के व्यापारी, वैरागी, कृषि विद्यालय, पुरात्व, स्नायुशास्त्र, न्यायालय, नगरनिगम, विधानसभा, जमींदार, स्मगलर, छोटे भाई बहिन जेल, विदेश, मंत्री इंजैक्शन, नीच वर्ग, हड्डियों के डॉक्टर, झूठ बोलना, भ्रमण पतन तामसवृत्ति बुरे धंधे आदि।

शनि का स्वरूप—पंचांगों में शनि की दोनों राशियों के दो स्वरूप हैं। मकर में मगरमच्छ और कुंभ में घड़ा हाथ में लिये पुरुष बताया गया है। अत: मगरमच्छ दु:ख का प्रतीक है तो पुरुष अमृत तथा धन पौरुष का प्रतीक है।

मकर लग्न में जन्में जातक का कद मध्यम लम्बा या नाटा होगा। शनि बलवान है तो लंबा कद होता है। रंग गेहुंआ या कालाश लिये हुए। नाक और मुंह कुछ बड़ा व चौड़ा। दांत चौड़े सुन्दर नेत्र आंखों की भौंहों पर बड़े-बड़े बाल हो सीने पर भी बड़े-बड़े बाल हो। सिर बड़ा तथा सीना चौड़ा हो। बड़े होने पर कुछ झुक कर चलें। मकर से पैर तक भाग पतला होगा।

कुंभ में प्राय: लम्बा कद। रंग गेहुंआ होठ मोटे गाल फूले हुए, कूल्हों व नितम्ब का हिस्सा भारी हो। मोटी गरदन, सिर में गंजापन भी जल्द आवें। घड़े के आकार का शरीर।

ये लोग भौतिक उन्नति में अधिक विश्वास करते हैं। गुप्त शक्ति हो। गैर समझ खड़ी कर देते हैं। छिपकर पाप करते हैं। धन के लोभी होते हैं। पर परिश्रमी अधिक होते हैं। प्रबल महत्वाकांक्षी होते है। उत्साही व जिम्मेदार होते हैं। मानसिक व आत्मिक शक्ति तीव्र होती है। मनोरंजन के शौकीन सुगंधित पदार्थों के शौकीन होते हैं। कठिनाइयों का सामना करना, श्रम व सेवा का ठोस भाव इनमें पाया जाता है। दूसरों को चोट पहुंचाने में दक्ष होते है। विचारशील होते हैं पर जब तक कोई छेडे नहीं शांत रहते है। धर्म भीरू होते हैं। नवीन आविष्कार देने वाले होते हैं।

वायु तत्व प्रधान होते हैं बाहरी आवरण से धार्मिक पर पुण्य कर्म व ईश्वर के प्रति निष्ठा भी होती है। घूमने के शौकीन भोजन के बाद शीघ्र आराम के इच्छुक उच्चाभिलाषी अपना पक्ष कमजोर देखें तो नम्र भी हो जावें। लज्जाहीन होते हैं। स्वभाव में ओछापन पाया जाता है। नीच वर्ग से प्रीतिवान होते हैं। स्मरण शक्ति प्रबल होती है। कोई इनका नुकसान करें तो बदला लेने में नहीं चूकते हैं। मन से डरपोक

बाहर से अभिमानी होते हैं। दूसरों को ठगने में रुचि होती है। अपना काम निकालने के लिए यह कुछ भी कर सकते हैं। खरी-खोटी कहने में हिचकते नहीं हैं। ऐसे जातक भावुक भी होते हैं। आवश्यकता हो तो ही काम करते हैं। जातक धन की व्यवस्था में प्राय: असफल रहते हैं, पर बाहरी चमक-दमक में विश्वास नहीं रखते हैं। किसी भी काम को परिश्रम से पूरा करना इनकी विशेषता होती है पर विश्वास पात्र कम बनते हैं। इनकी आकस्मिक रूप से उन्नति और अवनति होती रहती है। प्राय: संतान पक्ष की इनको चिंता सताती रहती है। स्त्रियों से व्यवहार भी मुसाफिरी जैसा रहता है। पर ऐसे जातक अधीनस्थ लोगों से काम कराने में चतुर होते हैं। हर काम में सावधानी बरतते हैं। सभी इनकी प्रशंसा करें इसके ये इच्छुक होते हैं। प्रशंसक से काम भी निकाल लेते हैं।

शनि के अचूक फल

1. शनि की दृष्टि अपने घर के सिवाय सर्वत्र हानि करती है।
2. छठें और आठवें तथा बारहवें भाव का कारक शनि इन भावों में हो तो लाभ प्रदान करेगा।
3. आठवें भाव में शनि नीच का हो तो धनपति बनता है। शनि नीच का होकर वक्री हो तो करोड़ों का स्वामी बनायेगा।
4. शनि, मीन, मकर, तुला व कुंभ राशि में लग्नस्थ हो तो व्यक्ति चिंतनशील, सुखी एवं ख्याति प्राप्त होता है। जातक का भाग्योदय मंद गति से होता है।
5. वृष लग्न में शनि नवम या दशम भाव में हो तो राजयोग बनेगा। ऐसा शनि सूर्य व बुध षष्ठ संबंध में से कोई संबंध कर ले तो अति योगप्रद होगा। अगर संयोग की जन्म राशि भी मकर या कुंभ हो तो उसको जब ढैया पनोती आयेगी वह लाभप्रद होगी। यदि अनिष्ट का कुछ प्रभाव गोचर से बनाता है। तो वह अंत में होगा, क्योंकि राजयोगकारी गृह प्रारंभ का प्रभाव प्रबल होता है।
6. वर्ष प्रवेश के लग्न वृष या तुला हो तो शनि शुभ फल देगा। यदि पनोती चल रही हो तो भी नाम पात्र का कष्ट होगा।
7. शुक्र+शनि में अभिन्न मित्रता है। अत: वृष या तुलालग्न में शनि शुभ फल प्रदान करेगा।
8. वर्ष में वृषलग्न हो और जलराशि मकर हो तो धनु व मीन का शनि अनिष्टप्रद रहेगा। पर मकर व कुम्भ का शनि शुभप्रद रहेगा।
9. जन्म या वर्ष में वृषलग्न हो और शनि+गुरु योग बनता हो या शनि की गुरु से प्रतियुति हो तो भाग्यनाशक योग होगा।

10. वृष या तुलालग्न हो और विंशोतरी शनि की महादशा चल रही हो साथ में पनोती भी आ जाये तो भी वह अधिक अनष्टिप्रद नहीं होगी।

11. शनि में शुक्र की महादशा या शुक्र में शनि की दशा हमेशा अनिष्टप्रद होगी।

12. नीचस्थ या वक्री गोचर का शनि जब जन्म राशिगत हो तो अनिष्टप्रद होगी।

13. शनि प्राय: राशि के अंत में फल देता है। सिंह लग्नस्थ शनि मंगल से दूषित हो तो अपघात, आकस्मिक मृत्यु, कारावास का भय होता है या रिश्वत के आरोप में पकड़ा जायें।

14. शनि+सूर्य का योग पितृस्थान में पिता से द्वेष व शत्रुता बढ़ाता है।

15. चंद्र+शनि युति कर्क राशि में उत्साह हीनता व व्यसन देती है। चंद्र+शनि युति सिंह राशि में बड़ों से विवाद कराती है। चंद्र+शनि युति मेष राशि में झगड़े करवाती है।

16. चंद्र+शनि युति अनिष्टप्रद होती है। इससे जीवन के उत्साह, ओज, कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है। यह यश रोकता है।

17. सूर्य से 5, 6, 8, 9वें भाव में राशि पर शनि हो तो अनिष्टकारी होगा।

18. जन्म में शनि स्थित राशि में या उससे छठे, आठवें स्थान या त्रिकोण में गोचर का गुरु आये तो अनिष्ट करेगा।

19. जन्मकालिक सूर्य से सप्तम स्थान पर गोचर का शनि आयें तो रोग ग्रस्त करेगा।

20. जन्मकालीन बुध तथा चंद्रमा को यदि गोचर का शनि अपनी दसवीं दृष्टि से देखे तो अनिष्ट अवश्य करेगा।

21. जन्म कालिक मंगल तथा शनि स्थिति राशियों पर अथवा उससे सप्तम स्थान की राशि पर ग्रहण आये तो जीवन में संकट आतें हैं।

22. अष्टमेश स्थित राशि पर गोचर का शनि विशेष अनिष्ट करता है।

23. जन्म की विंशोतरी दशा से चौथी दशा शनि की हो तो अनिष्टप्रद होती है।

24. मीन, तुला और धनु राशि का शनि लग्न में हो तो जातक समृद्धशाली होता है।

25. लग्न का शनि राशि 1, 2, 5, 10 का हो या 4, 8, 12 राशि का हो तो भाषण शक्ति में बाधा प्रदान करेगा।

26. शनि चतुर्थेश होकर दशम भाव में बैठें तो मनुष्य छोटी स्थिति से उठकर महान् पदवी प्राप्त करेगा। शनि लग्नेश या अष्टमेश होकर बली हो तो दीर्घसुख देगा।

27. शनि की दृष्टि द्वितीय भाव, भावेश, पंचम भाव भावेश अथवा बुध पर हो तो अल्प विद्या या विघ्न युक्त विद्या होगी।

28. एकादश भवन में स्थित शनि मनुष्य की मृत्यु सन्निपात व स्नायु रोगों से कराता है।

29. मकर अथवा कुंभ लग्न का स्वामी शनि यदि कुण्डली में पीडित हो तो जंघाओं में कष्ट देगा।

30. सप्तमेश शनि हो और सप्तम भाव तथा शुक्र पर इसकी शुभ दृष्टि हो तो जातक का विवाह देरी से होता है।

31. पंचमेश शनि बलवान हो तो लड़कियों की भरमार रहती है।

32. शनि यदि चंद्र पर अपनी दृष्टि का प्रभाव डाले तो जातक वैरागी होगा।

33. चतुर्थेश शनि बलवान हो तो जातक को जमीन जायदाद का सुख प्राप्त होगा।

34. नीच राशि में शनि प्रायः नौकरी करवाता है।

35. शनि+सूर्य युति पिता पुत्रों में मनोमालिन्य रखती है। अलग फल होते हैं, पर अष्टम भाव में दरिद्रता बनती है। यदि युति पिता व पुत्रों में से एक को हानि देती है।

36. शनि+चंद्र युति का योग माता-पुत्र में मनोमालिन्य देता है पर अलग भावों में अलग फल है फिर भी अष्टम भाव में जलोदर योग बनता है।

37. शनि+मंगल की युति यह भी भयंकर अवरोध योग है। अलग-अलग भावों में अलग पर इसके होने से सम्पत्ति नष्ट होती है।

38. शनि बुध युति योग इसमें व्यक्ति अन्वेषक होता है, पर जातक के निर्णय लेने में अस्थिरता रहती है। अष्टम स्थान में यह युति दीर्घायुज बनती है।

39. शनि गुरु युति योग इसके विचित्र परिणाम होते हैं। सुमश, सम्पत्ति व संतति में से एक का अभाव रहेगा। वंशश्रम की ज्यादा संभावना है।

40. शनि तथा राहु युति योग होने से महाविचित्र परिणाम प्राप्त होते हैं। आयु के 42वें वर्ष में जातक का भाग्योदय होता है। अकस्मात् धन प्राप्ति व हानि होती है।

उपचार

1. महामृत्युंजय जप या शिव का जाप करें।
2. अमोघ शिवकवच का पाठ करें।
3. शनि संबंधी व्रत व कथा पढ़ें।
4. नीलम रत्न तथा पन्ना भी धारण करें। ये रत्न 5 वर्ष धारण करने के बाद प्रभावहीन हो जाते हैं।

5. मछलियों को आटे की गोलियां चुगाएं।
6. अपने खाने का अंतिम ग्रास बचाकर उसे कौवे को दें।
7. शनि संबंधी दान दें। (उड़द, लोहा, तेल, चमड़ा, पत्थर, शराब, स्प्रिरिट)
8. नित्य कीड़ी नगरा सींचे।
9. हर शनि तथा मंगलवार को काले कुत्तों को मीठा दें।
10. काले कुत्ते को तेल में चुपड़ी रोटी पर मिष्टान रखकर हर शनिवार को खिलाएं।
11. दशरथकृत शनि स्रोत का पाठ करें।
12. नित्य सूर्योदय के समय सूर्य दर्शन करते समय यह श्लोक 7 बार पढ़े।
सूर्यप्रुभो दीर्घदेहो विशलादा शिनप्रिरा: मंदवार: प्रसन्नात्मा पीड़ा दहतु में शनि।
13. श्री वीर भगवान ताड़क का प्रयोग करें।
14. शनिवार को अपने हाथ के नाप का 19 हाथ काला धागा श्री माला बनाकर पहनें।
15. शनि पाताल क्रिया करें।
16. शनिवार को नक्षरों और काले कुत्तें को लड्डू खिलाएं।
17. प्रत्येक शनिवार को वट एवं पीपल के वृक्ष तले सूर्योदय से पूर्व कड़वे तेल का दीपक जलाकर शुद्ध दूध अर्पित करें।
18. व्रत का उद्यापन अवश्य करें, उसमें 33 ब्राह्मणों का भोजन कराना उत्तम होता है।
19. किसी शनिवार से आरम्भ करें 21 दिन में इस मंत्र को 23,000 बार जाप करें या कराएं।

ओ३म् प्रां प्रीं प्रौं स शनैश्चराय नमः।

अंत में शनि की वस्तुओं को दान में दें तथा हवन करें।

20. वीर विक्रमादित्य व शनि की कथा का रोज पाठ करें।

❑❑❑

शनि का खगोलीय स्वरूप

बृहस्पति के बाद बड़े ग्रहों में शनि का स्थान है। नील वर्ण का यह ग्रह सूर्य से 1,42,60,00,00 कि.मी. की दूरी पर है। शनैःचर अर्थात् मन्द गति से चलने वाला यह ग्रह 29 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। शनि आकार में केवल बृहस्पति से ही छोटा है। इसका व्यास 1,20,500 कि.मी. है। इसका गुरुत्व पृथ्वी के गुरुत्व से 65 गुणा अधिक है। नौ चंद्रमा शनि ग्रह की परिक्रमा करते हैं, उनमें से छठा चंद्र मन्दी सबसे बड़ा होता है। शनि ग्रह अस्त होने के 3 दिन बाद उदय होता है। उदय के 135 दिन मार्गी होता है। मार्गी के 105 दिन बाद पश्चिम में पुनः अस्त हो जाता है। शनि को काण, अर्कपुत्र छायात्मक, असित, नील, मन्द, खेज आदि नाम दिये गये हैं।

शनि की गति–शनि ग्रह सूर्य की परिक्रमा 29 वर्ष 5 महीने 16 दिन, 23 घण्टा और 16 मिनट में करता है। यह अपनी धुरी पर 17 घण्टा 14 मिनट 24 सेकेंड में एक चक्कर लगाता है। स्थूल मान से यह एक राशि पर 30 महीना, एक नक्षत्र पर 400 दिन और एक नक्षत्र पाद पर 100 दिन रहता है। यह प्रति वर्ष चार महीने वक्री और आठ महीने मार्गी रहता है। सूर्य से 15 डिग्री अंश की दूरी पर शनि ग्रह अस्त हो जाता है। अस्त होने के 38 दिन बाद यह उदय होता है। उदय के 135 दिन बाद मार्गी होता है और मार्गी के 105 दिन बाद पश्चिम दिशा में पुनः अस्त हो जाता है। यह प्रायः 140 दिन तक भी वक्री रह जाता है तथा वक्री होने के 5 दिन आगे या पीछे तक यह स्थिर रहता है।

गणितागत स्पष्टीकरण से जब यह सूर्य से चौथी राशि को समाप्त करता है तो वक्री हो जाता है। जब वक्री से 120 डिग्री अंश चलता है तो मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 7/45 की होती है। तब यह अतिचारी हो जाता है। सूर्य से दूसरी और बारहवीं राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समाचारी, चौथी पर मन्दचारी, पांचवीं और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवीं पर अति वक्री तथा नवमी और दसवीं पर कुटिल गति वाला होता है।

❑❑❑

मकरलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मकरलग्न का स्वरूप

मन्दाधिपस्तमी भौमी याम्येट् च निशि वीर्यवान्॥19॥

पृष्ठोदयी बृहद्गात्रः कर्बुरो वनभूचरः।

आदौ चतुष्पदोऽन्ते तु विपदो जलगो मतः॥20॥

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अ. 4/श्लो. 20

तमोगुणी, भूमितत्व, दक्षिणवासी, रात्रिबली, पृष्ठोदय, दीर्घ शरीर, चित्रवर्ण, वन और भूमिचारी, पूर्वार्धचतुष्पद और उत्तरार्द्ध पदहीन और जलचर है, इसका स्वामी शनि है॥19-20॥

नित्यं लालयति स्वदारतनयान् धर्मध्वजोऽधः कृशः,

स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।

शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वाधिकः काव्यविल्,

लुब्धोऽगम्यजरांगनासु निरतः संत्यक्त लज्जोऽघृणाः॥10॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 10

मकर राशि में चंद्रमा हो तो जातक अपने परिवार (स्त्री व पुत्र) का विशेषतया पालन करने वाला, मन से अधार्मिक होता हुआ भी प्रयोजन विशेष से धार्मिक क्रिया करने वाला तथा धार्मिक चिह्न धारण करने वाला, शरीर के निचले आधे हिस्से में अपेक्षाकृत पतलापन लिए हुए, सुन्दर आंखों वाला, पतली कमर वाला, सदैव कहना मानने वाला अथवा कही हुई बात के रहस्य को अच्छी तरह समझ सकने वाला, सौभाग्यशाली, अलसाए तन, मन वाला अथवा कार्य में अकुशल, शीत सहन न करने वाला, भ्रमणशील, अधिक सत्व अर्थात् आत्मबल वाला, काव्यज्ञ, लोभ, नीची जाति की या अपने से बड़ी अवस्था वाली स्त्रियों के प्रति अनुरक्त, लज्जाहीन तथा दया रहित होता है।

मृगस्य लग्ने पुरुषोऽभिजातः स्यान्नीचकर्मा बहुभृत्यपुत्रः।

लुब्धोऽलसः स्वात्मपरः कृतघ्नः स्वकार्यनित्यो गुरुवत्सलश्च॥10॥

–वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.10/ पृ.289

यदि मकरलग्न के उदय काल में जन्म हो तो मनुष्य अच्छे कुल में उत्पन्न होने वाला, नीच कार्य करने वाला, अनेक पुत्रों व नौकरों वाला, लोभी, आलसी स्वभाव वाला, अपनी प्रशंसा में रत रहने वाला, किए गए उपकार को भी न मानने वाला, सदैव स्वार्थ में रत रहने वाला, गुरुओं का प्रिय पात्र होता है।

ना कुम्भीरसमुद्भवश्च रमणीलोलः शठो दीनवाक्

–जातक पारिजात श्लो. 10/ पृ. 678

स्त्रियों से रमण करने के लिए चंचल चित्त, शठ दीनवाक् अर्थात् उसकी वाणी में दैन्य या मृदुता रहती है किन्तु चित्त शठता से भरा होता है।

व्यालम्बभुजः श्यामः प्रथितयशोरूपकान्तिशठः।

स्मितभाषी मकराद्ये स्त्रीषु जितो वल्गुचेष्टधनयुक्तः॥

–सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में मकर राशि व मकर राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक लम्बे हाथ वाला, कृष्ण वर्ण, विस्तृत यश वाला, सुन्दर रूपवान्, धूर्त, हंसमुख, स्त्रियों से पराजित, सुन्दर इच्छा वाला और धन से युक्त होता है।

मकरोदयसञ्जातो नीचकर्मा बहुप्रजः।

लुब्धोऽलसो विनिष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः॥

–मानसागरी अ. 1/ श्लो. 10

मकरलग्न में जन्म लेने वाले जातक लोभी, नीचकार्य में लीन, बहु उद्देश्य वाला तथा आलस्यमय, अपने कार्य में दक्ष, हठवादी, सहांरक, स्वार्थ तत्व प्रधान रहे।

भोजसंहिता

मकरलग्न का स्वामी शनि है। शनि पाप ग्रह है तथा उसका रंग काला होता है। इस राशि वाले व्यक्ति प्रायः काले, नाक चपटी, पैनी आंखें, शरीर से ये पतले, फुर्तीले तथा कुछ लम्बे कद के होते हैं। यह चर संज्ञक व पृथ्वीतत्व प्रधान राशि है। इसका प्राकृतिक भाव उच्च पदाभिलाषी होता है। मकरलग्न वाले व्यक्तियों का स्वभाव उग्र होता है। इनके स्वभाव में उत्साह के साथ-साथ झगड़ालू प्रकृति भी होती है। क्रोध इनको धीरे-धीरे आता है व शान्त भी देरी से होता है। जहां ये अपना पक्ष

कमजोर देखते हैं वहां पर ये नम्र भी हो जाते हैं। यदि आपका नाम 'भो' से प्रारंभ होता है तो आप उन व्यक्तियों में से एक हैं जो अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं। आप बहुत ही परिश्रमशील व उद्यमी व्यक्ति हैं। हिम्मत हारना व निराश होना आपने सीखा ही नहीं।

सामान्यतया मकरलग्न में उत्पन्न जातक शान्त तथा उदार प्रकृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति उनके मन में प्रेम तथा सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है। इसके मुख मण्डल पर विचारशीलता, शान्ति एवं गंभीरता सदैव विद्यमान रहती है। ये अत्यन्त ही कर्मशील एवं परिश्रमी होते हैं फलत: सांसारिक महत्त्व के कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता प्रबल होती है तथा यही इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा का भाव भी रहता है तथा समाज एवं देश सेवा के प्रति ये उद्यत रहते हैं। ये साहसी एवं संघर्षशील होते हैं तथापि इनके मन में यदा-कदा उदासीनता के भाव की उत्पत्ति होती है जिससे सुख-दु:ख के समान भाव की अनुभूति करते हैं एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के लिए ये उत्सुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त परिश्रमी एवं अध्ययनशील होने के कारण ये अनुसंधान, विज्ञान या शास्त्रीय विषयों का ज्ञान अर्जित करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक पहचान प्राप्त करते हैं।

अत: इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली पुरुष होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव होगा तथा अपने आदर्शों पर चलने के लिए स्वतंत्र होंगे। आपके सभी कार्य बुद्धिमत्तापूर्वक सम्पन्न होंगे एवं उनमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी। देश सेवा का भाव भी आपमें विद्यमान रहेगा तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों से भी उदारता करेंगे फलत: वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अत: आपके सद्‌गुणों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमत्तापूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करके धन वैभव एवं सुख अर्जित करेंगे। संगीत के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि भी अर्जित कर सकते हैं। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रुचिशील होंगे तथा एक चतुर व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। आपकी पुत्र संतति प्रसिद्ध रहेगी तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलता रहेगा।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भावना होगी तथा उनकी सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके एक धनवान के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। भौतिक तथा अन्य सुखों को भी आप अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक

इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। आप युवावस्था में संघर्षशील रहेंगे परन्तु वृद्धावस्था में सुख एवं शांति प्राप्त करेंगे।

धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग के आप प्रिय होंगे तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस प्रकार आप विद्वान, उदार, शान्त एवं पराक्रमी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा स्व परिश्रम से धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

यदि आपका जन्म अभिजित् नक्षत्र में है तथा आपका नाम ज व ख से प्रारम्भ होता है तो आपके अन्य भाई बहन भी हैं परन्तु उनसे सहायता की अपेक्षा हानि की संभावना अधिक है। जीवन में विनोदी स्वभाव बनाये रखना आपकी विशेषता है इसी विशेषता के कारण अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति भी आपके मित्र बन जायेंगे। सार्वजनिक कार्यों में आप बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे। आपका विवाहित जीवन पूर्णत: सुखी नहीं कहा जा सकता।

यदि आपका जन्म 14 जनवरी से 13 फरवरी के बीच में है तो आप व्यापारशील व्यक्ति होने के साथ-साथ रात्रि बली है। आपका मस्तिष्क सक्रिय है। शनि अन्य ग्रहों के बनिस्बत धीमी गति से चलता है तो आपका भाग्योदय शनै-शनै: होता है। आपका Rising Period 30 वर्ष की आयु के पश्चात् बनता है तथा 36 वर्ष के पश्चात् आपको भाग्य निर्माण तेजी से प्रारम्भ होना शुरू हो जाता है।

यदि आपका जन्म 26 अप्रैल से 25 मई के बीच (वैशाख महीने) में है तो आप उन भाग्यशाली व्यक्तियों में से हैं जिनका नाम गौरव के साथ लिया जाता है आपकी गुप्तशक्तियों से बहुत कम लोग परिचित है आप विशिष्ट प्रभाव वाले होने से आपको राजकीय कार्यों में शीघ्र सफलता मिल जायेगी।

आप जलचर राशि से संबंध रखने के कारण चंचल व जल क्रीड़ाप्रिय व्यक्ति हैं। आप किसी भी बात पर निर्णय सोच-विचार कर धीरे-धीरे लेंगे। आप ऊंची-ऊंची योजनाएं बनाने में सदा तत्पर रहते हैं। कमाते बहुत पर पास में टिकता नहीं। हर समय द्रव्य का अभाव महसूस करते हैं। पत्नी व आपके विचारों में असमानताएं, आपके विवाति सुख को कटुतर बनाने में सहायक हैं। आपके राशि चिह्न मगरमच्छ है। मगरमच्छ के आंसू वाली कहावत लोक प्रसिद्ध है। मगरमच्छ के आंसू अन्दर से कुछ बाहर से कुछ। ऐसे व्यक्ति दीनस्वरूप व दयनीय स्थिति का बोध कराते हुए अन्त: कपटी होते हैं। ये बहुभोगी व विषयवासना से आसक्त रहने वाले व्यक्ति होते हैं। भोजन के बाद शीघ्र आराम करने की इच्छा रहती है। ये कहते कुछ हैं व करते कुछ। अत: ये व्यक्ति अमिलनसार व भीड़-भाड़ से दूर रहना पसन्द करते हैं। इनमें स्वार्थ

की प्रवृत्ति कुछ विशेष रहने के कारण इनको धार्मिक व राजनैतिक क्षेत्र में सफलताएं कम मिलती है। या तो ये अत्यधिक गोरे होंगे या काले। इसी प्रकार या तो ये कट्टर आस्तिक होंगे या फिर एकदम नास्तिक। यह विचार इनमें जन्माक्षर को देखकर बताया जा सकता है। शनि भय व भ्रांति को सूचक है। इसका रंग नीला व काला मिश्रित है। आपका जीवन रत्न नीलम है।

नक्षत्रानुसार फलावेश

भो जा जी	खा खी खू खे खो	गा गी
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चंद्रमा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में

वैश्वे विनीतो बहुमित्रधर्म,
युतः कृतज्ञः सुभगः शशांके।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा उत्तराषाढा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक बहुत नम्र, बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ, भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा सूर्य का नक्षत्र है जो कि चंद्रमा का मित्र है, इसलिए यह सब शुभ फल कहा है।

उत्तराषाढा के प्रथम पाद—उत्तराषाढा के प्रथम पाद में यदि चंद्र जन्मकुण्डली में स्थित हो तो जातक राजा के समान होता है। यहां नक्षत्र पाद स्वामी गुरु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य। चंद्रमा, सूर्य और गुरु तीनों राजकीय ग्रह हैं, अतः सूर्य और गुरु का चंद्र का प्रभाव राज्यसत्ता की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

उत्तराषाढा के द्वितीय पाद—उत्तराषाढा के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा जन्मकुण्डली में स्थिति हो तो व्यक्ति मित्रों का विरोधी होता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी शनि बनता है जो कि चंद्र का शत्रु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य का भी। अतः विरोध का भावना चंद्र में उत्पन्न हो सकती है।

उत्तराषाढा के तृतीय पाद—उत्तराषाढा के तृतीय पाद में यदि जन्मकुण्डली में स्थित हो तो व्यक्ति मान प्राप्त करता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी फिर शनि है। ग्रह कैसे मान दे सकता है। विचारणीय विषय है। केवल सूर्य तो मानप्रद है।

उत्तराषाढा के चतुर्थ पाद—उत्तराषाढा के चतुर्थ पाद में यदि जन्मकुण्डली में स्थित हो तो मनुष्य का धर्म में लगाव वाला होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी एक परम धार्मिक ग्रह गुरु है। जिसके प्रभाव द्वारा चंद्र का धार्मिक हो जाना सहज ही में समझा जा सकता है। नक्षत्र स्वामी भी धार्मिक अथवा सात्विक है, अतः यह भी इस दिशा में सहायक ही है, बाधक नहीं।

चंद्रमा श्रवण नक्षत्र में

उदारधीरः श्रुतवान्धनी च,
श्रीमान् प्रसिद्धः श्रवणे नरः स्याद्।

यदि जन्म सयम पर चंद्रमा श्रवण नक्षण में हो तो जातक उदार धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी, ख्याति वाला होता है। श्रवण का स्वामी चंद्रमा होता है, अत: चंद्रमा अपने ही नक्षत्र में स्थित होकर उपरोक्त शुभ करेगा। लग्न होने से ख्याति और धन देगा, उदारता और धैर्य मानसिक गुणों से भी युक्त होगा, क्योंकि चंद्रमा स्वयं एक मानसिक ग्रह है। प्रकाशवान होने से जानकारी भी प्राप्त करवाएगा।

यदि आपका जन्म श्रवण नक्षत्र में है तथा आपका नाम ग व गौ से प्रारम्भ होता है तो आपको पैतृक नुकसान व पिता से आपके किन्हीं कारणों से मनमुटाव रहेगा। आपको धन उद्यम से प्राप्त होगा। आप एकान्त प्रिय व्यक्ति होंगे आपके शत्रु बहुत होंगे तथा मित्रों की भी कमी आपको नहीं रहेगी। परन्तु शत्रु आपसे दबेंगे तथा अन्त में विजय आपकी रहेगी।

श्रवण के प्रथम पाद–श्रवण के प्रथम पाद में यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य शुभ मान को प्राप्त होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी मंगल होता है और नक्षत्र का स्वामी स्वयं चंद्र। अत: मंगल जो चंद्र का मित्र है उसके मान आदि की वृद्धि में सहायक होगा।

श्रवण के द्वितीय पाद–श्रवण के द्वितीय पाद में यदि जन्म समय पर चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति शुभ गुणों से युक्त होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी शुक्र है। प्रबल चंद्र शुक्र से उसकी शुभता को ग्रहण कर और भी अधिक गुणी तथा शुभ होने का परिचय देगा।

श्रवण के तृतीय पाद–श्रवण के तृतीय पाद में यदि जन्म समय पर चंदमा स्थित हो तो जातक विद्वान् होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी बुध है जो विद्वान है और अपनी विद्वत्ता को चंद्र के प्रति भी देगा।

श्रवण के चतुर्थ पाद–श्रवण के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर चंद्रमा स्थित हो तो जातक धार्मिक होता है। नक्षत्र का स्वामी भी चंद्र है नक्षत्र पाद का स्वामी भी चंद्र है और इनमें बैठने वाला ग्रह भी चंद्र है। स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में चंद्र अपने उत्कृष्ट गुणों का परिचय देगा जिनमें एक धार्मिक होना भी होगा।

चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में

दातार्थ शूरो धनवांस्त्वरोगी,
गीतप्रियो वासव भे प्रजात:

यदि जन्म समय पर चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और गीतप्रिय होता है।

धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल होता है। मंगल चंद्रमा का मित्र है अत: मित्र के नक्षत्र में स्थित होकर चंद्रमा धनी और दाता और भोगी होगा ही। मंगल अपनी शूरवीरता भी देगा और भोगों की प्रवृत्ति भी। गीतप्रिय चंद्रमा के अपने स्वभाव के कारण होगा। सम्भवतया गायक न होगा।

धनिष्ठा के प्रथम पाद—धनिष्ठा के प्रथम पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति लम्बी आयु वाला होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी सूर्य है जो चंद्र के बल पाकर आयु दे सकता है, नहीं तो सूर्य मंगल का सम्मिलित प्रभाव से आयु को घटाने वाला है, बढ़ाने वाला नहीं।

धनिष्ठा के द्वितीय पाद—धनिष्ठा के द्वितीय पाद में यदि जन्म पर चंद्र स्थित हो तो जातक पण्डित होता है। नक्षत्र का स्वामी तर्कशील मंगल है और नक्षत्र पाद स्वामी बुद्धिमान बुध है। इसलिए इन विद्वत्तापूर्ण ग्रहों के प्रभाव के कारण लग्नरूप चद्रमा में पाण्डित्य का आना उपयुक्त ही है।

❑❑❑

नक्षत्र चरण, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वानी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सु	अ	0/30/0/0	1	गु.
चे	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं	–	–	–	–
वृष राशि											
3. कृत्तिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वापी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	चू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)				6. आर्द्रा (राहु)				7. पुनर्वसु (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)				8. पुष्य (शनि)				9. आश्लेषा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13. हस्त (चंद्र)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.
री	6/6/40/0	4	मं.
–	–	–	–
–	–	–	–

15. स्वाति (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
रू	6/10/0/0	1	गु.
रे	6/13/20/0	2	श.
रो	6/16/40/0	3	श.
ता	6/20/0/0	4	गु.

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ती	6/23/20/0	1	मं.
तू	6/26/40/0	2	शु.
ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

17. अनुराधा (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
ना	7/6/40/0	1	सू.
नी	7/10/0/0	2	बु.
नू	7/13/20/0	3	शु.
ने	7/16/40/0	4	मं.

18. ज्येष्ठा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
नो	7/20/0/0	1	गु.
या	7/23/20/0	2	श.
यी	7/26/40/0	3	श.
यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रवण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.
गे	10/6/40/0	4	मं.
–	–	–	–
–	–	–	–

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
सा	10/13/20/0	2	श.
सी	10/16/40/0	3	श.
सू	10/19/0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
से	10/23/20/0	1	मं.
सो	10/26/40/0	2	श.
दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

27. उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दू	11/6/40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु.
झ	11/13/20/0	3	गु.
ञ	11/16/40/0	4	गु.

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11/20/0/0	1	गु.
दो	11/23/20/0	2	श.
चा	11/26/40/0	3	श.
ची	11/30/0/0	4	गु.

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्रिय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3, हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्रिय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृत्तिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रिय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृत्तिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ड,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2, सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2, मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंभ	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू । श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. । मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	ये,यो,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1, हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2, मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू, 1 स, 1 मू, 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू., 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जा,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3, वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 वि., 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी., 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्वा भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प, 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प, 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	11.	पू. फा.	भंग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेव	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

मकरलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मकरलग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**–भो
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'मित्रविरोधी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण में होने से आपको मित्रों का विरोध सहना पड़ेगा। उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश है तथा सूर्य का शत्रु है। शनि की दशा धनदायक व उन्नतिदायक होगी परन्तु सूर्य की दशा नेष्ट (प्रतिकूल) फल देगी।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से उसका विकास रुका हुआ रहेगा। यहां लग्नेश शनि की दशा का अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा।

मकरलग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**–भो
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'मित्रविरोधी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण में होने से आपको मित्रों का विरोध सहना पड़ेगा। उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश है तथा सूर्य का शत्रु है। शनि की दशा धनदायक व उन्नतिदायक होगी। परन्तु सूर्य की दशा नेष्ट (प्रतिकूल) फल देगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से **'उदित अंशों'** का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। शनि 20 अंशों तक विशेष बलवान होता है।

मकरलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**–भो
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

17. प्रधान विशेषता–'मित्रविरोधी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण में होने से आपको मित्रों का विरोध सहना पड़ेगा। उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश है तथा सूर्य का शत्रु है। शनि की दशा धनदायक व उन्नतिदायक होगी। परन्तु सूर्य की दशा नेष्ट (प्रतिकूल) फल देगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान होता है।

मकरलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–9/3/20/0

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–नकुल

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा

10. वर्णाक्षर–जा

11. वर्ग–सिंह

12. लग्न स्वामी–शनि

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'मानी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के तृतीय चरण में होने से आप मान-सम्मान चाहने वाले 'यश पिपासु' व्यक्ति होंगे। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अतः शनि की दशा आपके लिए उन्नतिदायक व धनदायक साबित होगी पर सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है।

मकरलग्न, अंश 4 से 5

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा	2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0 से 9/6/40/0	
4. **वर्ण**–वैश्य	5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल	7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य	9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**–जा	11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–शनि	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'मानी'	

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के तृतीय चरण में होने से आप मान-सम्मान चाहने वाले 'यशापिपासु' व्यक्ति होंगे। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अतः शनि की दशा आपके लिए उन्नतिदायक व धनदायक साबित होगी पर सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है।

मकरलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा	2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0 से 9/6/40/0	
4. **वर्ण**–वैश्य	5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल	7. **गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा

10. वर्णाक्षर–जा

11. वर्ग–सिंह

12. लग्न स्वामी–शनि

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'मानी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप मान-सम्मान चाहने वाले 'यशपिपासु' व्यक्ति होंगे। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है। अतः शनि की दशा आपके लिए उन्नतिदायक व धनदायक साबित होगी पर सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी।

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है।

मकरलग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा

2. नक्षत्र पद–4

3. नक्षत्र अंश–9/6/40/0 से 9/10/0/0

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–नकुल

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा

10. वर्णाक्षर–जी

11. वर्ग–सिंह

12. लग्न स्वामी–शनि

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपकी रुचि धर्म-आध्यात्म के प्रति

विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलत यहां सूर्य और बृहस्पति की दशा इतना अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उनसे अपेक्षा है। शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है।

मकरलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराषाढ़ा **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—9/6/40/0 से 9/10/0/0

4. वर्ण—वैश्य **5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—नकुल **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**—विश्वेदेवा

10. वर्णाक्षर—जो **11. वर्ग**—सिंह

12. लग्न स्वामी—शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी—बृहस्पति **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपकी रुचि धर्म-आध्यात्म के प्रति विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलतः यहां सूर्य और बृहस्पति की दशा उतना अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उनसे अपेक्षा है। शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान होता है।

मकरलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराषाढ़ा **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—9/6/10/0 से 9/10/0/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–नकुल

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा

10. **वर्णाक्षर**–जी

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपकी रुचि धर्म-आध्यात्म के प्रति विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलत यहां सूर्य और बृहस्पति की दशा इतना अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उससे अपेक्षा है। शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–9/6/40/0 से 9/10/0/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–नकुल

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा

10. **वर्णाक्षर**–जी

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र [redacted] सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपकी रुचि धर्म-आध्यात्म के प्रति विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलत यहां सूर्य एवं बृहस्पति की दशा इतनी अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उसे अपेक्षा है। शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र—श्रवण
2. नक्षत्र पद—1
3. नक्षत्र अंश—9/13/2/0
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—कपि
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—विष्णु
10. वर्णाक्षर—खी
11. वर्ग—बिलाव
12. लग्न स्वामी—शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'शुभमानी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का है। ऐसा जातक मान-सम्मान का इच्छुक एवं शुभ चिंतन करने वाला, आशावादी व्यक्ति होता है। श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। मंगल लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का मित्र है। फलत: यहां चंद्र और मंगल की दशाएं शुभ फल देंगी। लग्नेश शनि की दशा उन्नति दायक, धनदायक साबित होगी।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र–श्रवण
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–9/13/12/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–कपि
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विष्णु
10. वर्णाक्षर–खी
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'शुभमानी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का है। ऐसा जातक मान-सम्मान का इच्छुक एवं शुभ चिंतन करने वाला, आशावादी व्यक्ति होता है। श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। मंगल लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का मित्र है। फलतः यहां चंद्र और मंगल की दशाएं शुभ फल देगी। लग्नेश शनि की दशा उन्नतिदायक, धनदायक साबित होगी।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान है।

मकरलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–श्रवण
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–9/13/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–कपि
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विष्णु
10. वर्णाक्षर–खी
11. वर्ग–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'शुभमानी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का है। ऐसा जातक मान-सम्मान का इच्छुक एवं शुभ चिंतन करने वाला, आशावादी व्यक्ति होता है। श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। मंगल लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का मित्र है। फलतः यहां चंद्र और मंगल की दशाएं शुभ फल देगी। लग्नेश शनि की दशा उन्नतिदायक, धनदायक साबित होगी।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है अतः शनि की दशा में जातक उन्नति की ओर विशेष रूप से आगे बढ़ेगा।

मकरलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/13/20/0 से 9/16/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खी
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'शुभगुणी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के दूसरे चरण में होने के कारण आप शुभगुणों से युक्त सकारात्मक विचारों के व्यक्ति होंगे। श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश

शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का भी शत्रु है। फलतः शुक्र यहां इतना शुभ फल नहीं दे पायेगा। जितना देना चाहिए। शनि की दशा-अंतर्दशा में व्यक्ति उन्नति करेगा, धन कमायेगा एवं स्वस्थ रहेगा।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। यहां शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान है, अतः शुभफल ही देगा।

मकरलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/13/12/0 से 9/16/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खू
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'शुभगुणो'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप शुभ गुणों से युक्त सकारात्मक विचारों के व्यक्ति होंगे। श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का भी शत्रु है। फलतः शुक्र यहां इतना शुभ फल नहीं दे पायेगा जितना देना चाहिए। शनि की दशा-अंतर्दशा में व्यक्ति उन्नति करेगा, धन कमायेगा एवं स्वस्थ रहेगा।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। यहां शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहेगा।

मकरलग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/13/12/0 से 9/16/40/0

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खू
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'शुभगुणो'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप शुभगुणों से युक्त सकारात्मक विचारों के व्यक्ति होंगे। श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का भी शत्रु है। फलतः शुक्र यहां इतना शुभ फल नहीं दे पायेगा जितना देना चाहिए। शनि की दशा-अंतर्दशा में व्यक्ति उन्नति करेगा, धन कमायेगा एवं स्वस्थ रहेगा।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–9/16/40/0 से 9/20/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खे
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'विद्वान्'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपकी गणना समाज के विद्वान् व्यक्तियों में होगी। तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्रमा का भी शत्रु है। फलतः बुध की दशा इतनी शुभ फलदाई नहीं होगी जितनी बुध से यहां अपेक्षा की जा रही है। शनि की दशा-अंतर्दशा धन, यश व प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगी।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है, पूर्ण बली है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–श्रवण
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–9/16/40/0 से 9/20/0/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–कपि
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विष्णु
10. वर्णाक्षर–खे
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'विद्वान'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपकी गणना समाज के विद्वान् व्यक्तियों में होगी। तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्रमा का भी शत्रु है। फलतः बुध की दशा इतनी शुभ फलदाई नहीं होगी जितनी बुध में यहां अपेक्षा की जा रही है। शनि की दशा-अंतर्दशा धन, यश व प्रतिष्ठा ने वृद्धि करेगी।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है, पूर्ण बली है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 18 से 19

1. **लग्न नक्षत्र**—श्रवण
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—9/16/40/0 से 9/20/0/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विष्णु
10. **वर्णाक्षर**—खे
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'विद्वान्'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपकी गणना समाज के विद्वान् व्यक्तियों में होगी। तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्रमा का भी शत्रु है। फलतः बुध की दशा इतनी शुभ फलदाई नहीं होगी जितनी बुध में यहां अपेक्षा की जा रही है। शनि की दशा-अंतर्दशा धन, यश व प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगी।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**—श्रवण
2. **नक्षत्र पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—9/20/0/0 से 9/23/20/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विष्णु
10. **वर्णाक्षर**—खो
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.
18. **प्रधान विशेषता**—'धार्मिको'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्यशाली, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने के कारण आपकी धर्म एवं आध्यात्म में पूरी रुचि रहेगी। श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है तथा लग्न नक्षत्र का स्वामी भी चंद्रमा है। ऐसे में चंद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान, यशस्वी होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा। शनि मेष राशि के 20 अंशों में परम नीच का एवं तुला राशि के 20 अंशों में परम उच्च का होता है तथा कुम्भ राशि के 20 अंशों तक मूल त्रिकोण का होगा। अत: यहां शुभाशुभ फल देने से शनि विशेष रूप से सक्षम है।

मकरलग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**—श्रवण
2. **नक्षत्र पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—9/20/0/0 से 9/23/20/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विष्णु
10. **वर्णाक्षर**—खो
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.
18. **प्रधान विशेषता**—'धार्मिको'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्यशाली, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने के कारण आपकी धर्म एवं आध्यात्म में पूरी रुचि रहेगी। श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है तथा लग्न नक्षत्र का

स्वामी भी चंद्रमा है। ऐसे में चंद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान, यशस्वी होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। शनि तुला राशि के 20 अंशों में परम उच्च का एवं मेष राशि के 20 अंशों में परम नीच का होता है। अतः यहां शनि अपनी शुभ-अशुभ स्थितियों का भरपूर फल देने में सक्षम होता है।

मकरलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–श्रवण
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–9/20/0/0 से 9/23/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–कपि
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विष्णु
10. वर्णाक्षर–खो
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व.
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
18. प्रधान विशेषता–'धार्मिको'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्यशाली, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने के कारण आपकी धर्म एवं आध्यात्म में पूरी रुचि रहेगी। श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है तथा लग्न नक्षत्र का स्वामी भी चंद्रमा है। ऐसे में चंद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान, यशस्वी होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से '**अवरोह अवस्था**' में है। शनि की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

मकरलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–9/26/40/0

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गा
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। परन्तु मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों में **'अवरोह अवस्था'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा में जातक को उत्तम स्वास्थ्य व धन की प्राप्ति होगी।

मकरलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–9/26/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गा
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। परन्तु मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में **'अवरोह अवस्था'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा में जातक को उत्तम स्वास्थ्य व धन की प्राप्ति होगी।

मकरलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र—धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद—1
3. नक्षत्र अंश—9/26/40/0
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—सिंह
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—वसु
10. वर्णाक्षर—गा
11. वर्ग—बिलाव
12. लग्न स्वामी—शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी—सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। परन्तु मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य **'अवरोह अवस्था'** में है, बलवान है। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

मकरलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**—धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—9/26/40/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—सिंह
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वसु
10. **वर्णाक्षर**—गा
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

मकरलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**—धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—9/26/40/0 से 9/30/0/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—सिंह
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वसु
10. **वर्णाक्षर**—गौ
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानों में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न छब्बीस से सताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। शनि की दशा अच्छी जायेगी।

मकरलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा

2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–9/26/40/0 से 9/30/0/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–सिंह

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–वसु

10. **वर्णाक्षर**–गौ

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानों में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। शनि की दशा अच्छी जायेगी।

मकरलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/26/40/0 से 9/30/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–बिलाव
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गौ
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–?
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–?
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–?
18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता धनी शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानों में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न अट्ठाईस से उन्नतीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर **'हीनबली'** है। शनि की दशा मध्यम फल देगी।

मकरलग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/26/40/0 से 9/30/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गौ
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानों में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न उन्तीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था में है। निस्तेज है। शनि की दशा में वांछित लाभ नहीं मिल पायेगा।

❑❑❑

मकरलग्न और आयुष्य योग

1. मकरलग्न वालों के लिये शनि लग्नेश होने से मारकेश का अशुभ फल नहीं देगा। मंगल मारकेश का कार्य करेगा। चंद्रमा द्वितीय मारक एवं अशुभ है। गुरु परम पापी है। सूर्य मारक व अनिष्टकारक है। आयुष्य प्रदाता ग्रह शनि है।
2. मकरलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु बिच्छु, सांप, अन्य विषैले जीवों के काटने से होती है। विषैले भोजन का भय इन्हें अधिक रहता है। पशु से, चोर से, घर एवं घर के बाहर, बन, जंगल एवं प्राय: पौधों के बीच मृत्यु होती है।
3. मकरलग्न में जन्म लेने वाले जातक की आयु 73 वर्ष के आस-पास होती है। इनको 1, 3, 5, 7वां बहन एवं जन्म के 1, 3, 6, 8, 18, 25, 28, 32, 37, 40, 43, 48, 51, 57 और 61वें वर्ष में शारीरिक कष्ट एवं अल्पमृत्यु संभव है।
4. मकरलग्न हो, लग्न में मंगल, बुध, शुक्र, शनि और सूर्य हो, बृहस्पति तीसरे हो तथा जन्म दिन में समय का हो तो ऐसा व्यक्ति एक कल्प तक चिरंजीव रहता है।
5. मकरलग्न में बुध, गुरु एवं शुक्र छठे हो, शनि सातवें या नीच का मंगल आठवें हो अन्य सभी ग्रह चंद्रमा के पीछे हों तो व्यक्ति कुबड़ा होता है।
6. मकरलग्न के 15 अंशों में हो, मंगल चौथे, चंद्रमा लग्न में एवं कर्क का गुरु सातवें हो तो ऐसा व्यक्ति 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
7. मकरलग्न में शनि, शुक्र या गुरु केन्द्र में हो, सभी पापग्रह तीसरे छठे या ग्यारहवें स्थान में हों तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
8. मकरलग्न में उच्च का शनि दशम भाव में जातक को दीर्घायु देता है।
9. मकरलग्न में दशमेश शुक्र पंचम भाव में हो, अष्टमेश सूर्य केन्द्र में अन्य शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को प्राप्त करता है।
10. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य लग्न में बैठा हो तथा सूर्य लग्न गुरु एवं शुक्र से दृष्ट हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

11. मकरलग्न में चंद्रमा छठे मिथुन का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
12. मकरलग्न में मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोणवर्ती हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।
13. मकरलग्न में उच्च का गुरु केन्द्र में हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शनि बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
14. मकरलग्न में लग्नेश शनि लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 73 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
15. मकरलग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें कर्क का एवं शनि मेष का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।
16. शनि लग्न में, मेष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें स्थान में अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य सातवें हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. मकरलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. मकरलग्न में लग्नेश शनि पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश सूर्य पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
20. मकरलग्न में शनि+मंगल लग्न में हो, पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें, एवं गुरु छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
21. मकरलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
22. मकरलग्न में मंगल धनु राशि में एवं गुरु वृश्चिक राशि में परस्पर घर परिवर्तन करके बैठे तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

23. मकरलग्न में चतुर्थेश मंगल द्वादश में हो, सप्तम भाव में कर्क का शनि हो, सप्तमेश चंद्रमा आठवें हो तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु आयु के 34वें वर्ष में वायुयान दुर्घटना द्वारा होती है।

24. मकरलग्न में सूर्य+मंगल+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

25. मकरलग्न में शनि सिंह राशि में एवं सूर्य मकर राशि का लग्न में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

26. मकरलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश स्थान में हो, गुरु अष्टम स्थान में हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

27. मकरलग्न के प्रथम भाव में राहु+सूर्य+शनि+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. मकरलग्न में दूसरे भाव में कुंभ का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी पाप ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

29. मकरलग्न में सप्तमस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

30. मकरलग्न में चतुर्थ भाव स्थित शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

31. मकरलग्न में लग्नेश शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

32. मकरलग्न (चर) में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. मकरलग्न में षष्ठेश बुध सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

34. मकरलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ, अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मकरलग्न और रोग

1. मकरलग्न में षष्टेश बुध लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. मकरलग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो, चतुर्थेश मंगल पापग्रह के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. मकरलग्न में चतुर्थेश मंगल यदि अष्टमेश सूर्य के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. मकरलग्न में चतुर्थेश मंगल कर्क राशि में हो, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. मकरलग्न में चतुर्थ स्थान में शनि एवं षष्ठेश सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. मकरलग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. मकरलग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं द्वितीय भाव में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. मकरलग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो लग्नेश शनि निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. मकरलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. मकरलग्न में शनि+मंगल+सूर्य की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।
11. मकरलग्न में पापग्रह हो, लग्नेश शनि बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. मकरलग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न को पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

13. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य लग्न में, लग्नेश शनि अष्टम में हो, लग्न को पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी बना रहता है।

14. मकरलग्न में चंद्रमा छठे मिथुन का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

15. मकरलग्न में मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोणवर्ती हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।

16. मकरलग्न में उच्च का गुरु केन्द्र में हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शनि बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

17. मकरलग्न में लग्नेश शनि लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 73 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

18. मकरलग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें कर्क का एवं शनि मेष का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

19. शनि लग्न में, मेष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दशम स्थान में अन्य किसी शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य सातवें हो तथ चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. मकरलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22. मकरलग्न में लग्नेश शनि पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश सूर्य पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

23. मकरलग्न में शनि-मंगल लग्न में हो, पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें, एवं गुरु छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

24. मकरलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

25. मकरलग्न में मंगल धनु राशि में एवं बृहस्पति वृश्चिक में परस्पर घर परिवर्तन करके बैठे तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

26. मकरलग्न में चतुर्थेश मंगल द्वादश स्थान में हो, सप्तम भाव में कर्क का शनि हो, सप्तमेश चंद्रमा आठवें हो तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु 34 वर्ष की आयु में वायुयान दुर्घटना द्वारा होती है।

27. मकरलग्न में सूर्य+मंगल+शनि अष्टम स्थान में शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष की आयु में हो जाती है।

28. मकरलग्न में शनि सिंह राशि में एवं सूर्य मकर का लग्न में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के पूर्व हो जाती है।

29. मकरलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, बृहस्पति अष्टम में हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

30. मकरलग्न के प्रथम भाव में राहु+सूर्य+शनि+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही **'शीघ्र-मृत्यु'** को प्राप्त होता है।

31. मकरलग्न के दूसरे भाव में कुम्भ का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

32. मकरलग्न में सप्तमस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

33. मकरलग्न में चतुर्थ भाव स्थित शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

34. मकरलग्न में लग्नेश शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

35. मकरलग्न (चर) में चंद्रमा पापग्रह के साथ हो सप्तम स्थान में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

36. मकरलग्न में षष्ठेश बुध सप्तम या दशम भाव में, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

37. मकरलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ, अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मकरलग्न और धन योग

मकरलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धनप्रदाता ग्रह शनि है। धनेश शनि की शुभाशुभ स्थिति, धन स्थान से सम्बन्ध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति, योगायोग, शनि तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पंचमेश शुक्र, भाग्येश बुध, लाभेश मंगल की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियां भी मकरलग्न में जन्मे जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को घटाने-बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

वैसे मकरलग्न के लिये मंगल, गुरु, व्ययेश और चंद्र सप्तमेश होने से अशुभ हैं तथा शुक्र व बुध शुभ हैं। शुक्र अकेला राजयोगकारक है। शनि लग्नेश होने से मारकेश का अशुभ फल नहीं देगा। मंगल मारक का काम करेगा। गुरु परमपापी का फल देगा। सूर्य भी पाप फलदायक है। चंद्र सहायक मारकेश है।

राजयोगकारक– बुध, शुक्र

सफल योग– 1. शनि+शुक्र 2. बुध+शुक्र, 3. शुक्र+मंगल 4. मंगल+बुध 5. चंद्र+शुक्र

अशुभ योग– 1. शनि+मंगल, 2. शनि+गुरु, 3. शनि+चंद्र

लक्ष्मी योग–शनि द्वितीय में, शुक्र केन्द्र-त्रिकोण में, बुध भाग्य स्थान में।

विशेष योगायोग

1. मकरलग्न में बुध कन्या राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से ही धनपति हो जाता है।
2. मकरलग्न हो शुक्र पंचम स्थान में हो तथा लाभ स्थान में मंगल हो तो व्यक्ति बहुत सारी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता हुआ प्रतिष्ठित धनवान होता है।

3. मकरलग्न में शनि मकर, कुंभ या तुला राशि में हो तो लक्ष्मी ऐसे व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ती।

4. मकरलग्न में शनि कन्या राशि में तथा बुध मकर या कुंभ राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। ऐसा व्यक्ति खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी अनुचरी होती है।

5. मकरलग्न में शनि मंगल के घर में एवं मंगल शनि के घर में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठे हों अर्थात् शनि मेष या वृश्चिक राशि में हो तथा मंगल मकर या कुंभ राशि में हो तो ऐसा जातक महाभाग्यशाली होता है। जातक जीवन में खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी दासी के समान सेवा करती है।

6. मकरलग्न में शुक्र यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो तथा शनि स्वगृही होकर कहीं भी बैठा हो तो व्यक्ति कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी धीरे-धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति, कोट्याधिपति बन जाता है।

7. मकरलग्न हो, शुक्र पंचम स्थान में हो तथा लाभ स्थान में मंगल हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।

8. मकरलग्न में शनि, मंगल और गुरु की युति हो तो "**महालक्ष्मी योग**" बनता है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी अति धनवान, ऐश्वर्यवान एवं महाप्रतापी होता है।

9. मकरलग्न में शनि वृश्चिक राशि में तथा लाभेश मंगल लग्न स्थान में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

10. मकरलग्न हो, लग्नेश व धनेश शनि, भाग्येश बुध, लाभेश मंगल अपनी-अपनी उच्च व स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।

11. मकरलग्न के नवम भाव में राहु, शुक्र, शनि और मंगल की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

12. मकरलग्न में धनेश शनि यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो "**धनहीन योग**" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार छिद्र वाले घड़े में पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास रुपया नहीं ठहर पाता। जातक को सदैव धन की तंगी बनी रहती है। इस दुर्योग से बचने के लिये अभियन्त्रित

"शनियंत्र" धारण करें। प्रबुद्ध पाठक यदि चाहे तो यह यंत्र हमारे कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

13. मकरलग्न में धनेश शनि आठवें स्थान में हो परन्तु सूर्य यदि लग्न स्थान को देखता हो तो जातक को पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन मिलता है या लॉटरी द्वारा धन मिलता है पर धन उसके पास में टिकता नहीं।

14. मकरलग्न में मंगल लग्न स्थान या चौथे स्थान में हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

15. मकरलग्न में सुखेश लाभेश मंगल नवम भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

16. मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति कुंभ, मेष, वृष या कन्या राशि में हो तो इस प्रकार के '**गजकेसरी योग**' के कारण व्यक्ति को अचानक उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत के कारण अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

17. मकरलग्न में धनेश शनि अष्टम स्थान में एवं अष्टमेश सूर्य धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

18. मकरलग्न में तृतीयेश गुरु लाभ स्थान में एवं लाभेश मंगल तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदारी एवं मित्रों के द्वारा धन लाभ होता है।

19. मकरलग्न में बलवान शनि के साथ यदि चतुर्थेश मंगल की युति हो तो व्यक्ति को माता, मातृपक्ष, नौकर एवं भूमि द्वारा धन लाभ होने की संभावना प्रबल रहती है।

20. 1, 4, 7, 9 स्थानों में यदि सूर्य, मंगल, राहु, शनि बैठे हों तो अन्न-धन का नाश होता है।

21. लग्न स्थान में सूर्य हो, दसवें-सातवें क्रमशः शनि-मंगल तथा सुख भाव में राहु हो तो वह व उसका परिवार भी पूर्ण दरिद्र होता है।

22. सूर्य केन्द्र स्थान में हो और चन्द्रमा अपने मित्र के नवमांश में हो तथा चंद्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक धनवान व गुणवान होता है।

23. द्वितीय त्रिकोण अर्थात् कन्या राशि में राहु-शुक्र-मंगल-शनि हो तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

24. द्वादश भाव, चंद्रमा से द्वितीय भाव या चंद्र के साथ कोई ग्रह न हो और लग्न से केन्द्र में सूर्य को छोड़कर अन्य कोई ग्रह न हो तो वह जातक दरिद्र व निन्दित होता है।

25. गुरु व चंद्रमा की युति यदि 4, 5, 9, 11वें भाव में से कहीं भी हो तो जातक को यकायक अर्थ प्राप्ति होती है।

26. चंद्रमा व मंगल एक साथ 1, 4, 7, 10वें केन्द्र भावस्थ 5, 9वें त्रिकोण में अथवा 2, 11वें भाव में कहीं हो तो जातक धनाढ्य होता है।

27. धनेश तुला राशि में एवं लाभेश मंगल मकर राशिगत अर्थात् लग्न में हो तो जातक धनवान होता है।

28. बुध पंचम भावस्थ हो तथा चंद्र, मंगल की युति लाभ भाव में हो तो जातक को यकायक अर्थ लाभ होता है।

29. चतुर्थेश मंगल व सप्तमेश चंद्रमा सप्तम भाव में ही स्थित हो तो जातक को ससुराल पक्ष से अर्थ प्राप्ति होती है।

30. सप्तमेश चंद्रमा यदि धन भाव में हो तो खोई हुई सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है अथवा विवाहोपरान्त आर्थिक दशा और अधिक सुदृढ़ होती है।

31. अष्टमेश पाप ग्रह से युक्त होकर दशम भावस्थ हो तो जातक राज्य पुरस्कार की प्राप्ति करता है अथवा दत्तक जाता है और धनी होता है।

32. मकरलग्न में यदि बलवान शनि की पंचमेश शुक्र से युति तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

33. मकरलग्न में बलवान शनि की यदि षष्टेश बुध से युति हो, धन भाव मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

34. मकरलग्न में बलवान शनि की सप्तमेश चंद्र से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

35. मकरलग्न में बलवान शनि की नवमेश बुध के साथ युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी ठेकों से काफी धन कमाता है।

36. मकरलग्न में बलवान शनि की दशमेश शुक्र से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति या पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

37. मकरलग्न में दशम भवन का स्वामी शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। ऐसा जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

38. मकरलग्न में लग्नेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

39. मकरलग्न में धन भाव में पाप ग्रह हो तथा लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।

40. मकरलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा यदि गुरु से छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

41. मकरलग्न में धनेश शनि अस्त हो, नीच राशि (मेष) में हो, धन भाव एवं अष्टम भाव में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।

42. मकरलग्न में लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत व पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्र होता है।

43. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य निर्बल होकर कहीं भी बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धनहानि का योग बनता है। ऐसे व्यक्ति की धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अतः सावधान रहें।

44. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत एवं पाप पीड़ित हो तो जातक को अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

मकरलग्न और विवाह योग

1. मकरलग्न में द्वितीय भाव में स्व का शनि कुंभ राशिस्थ हो, राहु व मंगल की युति शनि के साथ हो। पत्नी भाव में शुक्र-गुरु हो और 8वें भाव में अर्थात् सिंह राशि में सूर्य-चंद्रमा हो तो वह जातक निश्चय ही वेश्यागामी होता है।
2. कन्या जातक की जन्म-कुण्डली हो तथा सप्तम भाव में अर्थात् कर्क राशि में सूर्य-मंगल हो तो जातिका को वैधव्य भोगना पड़ता है।
3. स्त्री जातक की जन्म-कुण्डली हो तथा मकरलग्न हो और लग्न में सूर्य-मंगल हो तो वह स्त्री विधवा होती है। राहु या केतु हो तो संतान का नाश, शनि हो तो जातक दरिद्र होती है।
4. मकरलग्न की स्त्री-कुण्डली में सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातिका पति को त्याग देती है, यदि मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री अवश्य विधवा होती है, यदि शनि सप्तम भाव में हो तो बड़ी होने पर विवाह होता है, चंद्रमा अपूर्व सौंदर्य व बुध रहे तो अतुल सौभाग्य प्राप्त होता है, गुरु सर्व-सुख प्रदान करता है तथा शुक्र भोग-लालसा में वृद्धि करता है।
5. सप्तमेश, नवमेश व शुक्र साथ हों तो ससुराल से अर्थ की प्राप्ति होती है।
6. चतुर्थेश मंगल व सप्तमेश चंद्रमा सप्तम भाव में ही स्थित हो तो जातक को ससुराल से अर्थ प्राप्ति होती है।
7. मकरलग्न में लग्नस्थ शनि चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
8. मकरलग्न में शनि और चंद्रमा यदि एक दूसरे को परस्पर देख रहे हों तो विवाह विलम्ब से होता है।
9. मकरलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय में सूर्य हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

10. मकरलग्न में शनि छठे हो, सूर्य आठवें हो एवं सप्तमेश चंद्रमा बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

11. मकरलग्न में सूर्य, शनि व शुक्र एक साथ कहीं भी बैठे हों, चंद्रमा निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

12. मकरलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

13. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हो तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

14. मकरलग्न में द्वितीयेश शनि वक्री हो अथवा द्वितीय भाव में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

15. मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा अस्त हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आता है और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

16. मकरलग्न में द्वितीयेश शनि, मंगल से परस्पर दृष्ट हो तो विवाह विलम्ब से होता है और ससुराल से खटपट रहती है।

17. मकरलग्न में गुरु तृतीय या सप्तम भाव में हो तो जातक एक पत्नीव्रत एवं भारतीय परम्परा में विश्वास रखता है। आयु के 34वें वर्ष में उसे विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति होती है। ससुराल से प्रचुर धन व मान मिलता है।

18. मकर में सूर्य या मंगल यदि सप्तम भाव में हो तो ऐसी स्त्री परपुरुषों के साथ रमण करती है।

19. मकरलग्न हो, लग्न में चंद्रमा व शुक्र स्थित हो, उन्हें पापग्रह देखते हो तो ऐसी स्त्री परपुरुष-गामिनी होती है। उसके व्याभिचार में उसकी माता या मातातुल्य अन्य वृद्ध स्त्री का पूर्ण सहयोग होता है।

20. मकरलग्न में सातवें सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो स्त्री पति द्वारा त्याग दी जाती है अर्थात् उसे तलाक होती है।

21. मकरलग्न हो, चंद्रमा चरराशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो, पाप ग्रह केन्द्र में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व अन्य पुरुषों से संसर्ग करती है।

22. मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा यदि चरराशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहेगा। ऐसे में बुध व शनि दोनों ही यदि सप्तम भाव में हो तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।

23. मकरलग्न में सप्तम स्थान में मंगल एवं सूर्य स्थित हो तो ऐसी स्त्री कई पुरुषों के साथ रमण करती है।

24. मकरलग्न में सूर्य व चंद्रमा सप्तम स्थान में हो तो ऐसी स्त्री अपने पति की इच्छा से परपुरुष में आसक्त रहती है।

25. मकरलग्न में सूर्य एवं मंगल सप्तम भाव में हो तथा लग्न या चद्रंमा पापपीडित हो तो ऐसी स्त्री विवाह के सात या आठ वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है।

26. मकरलग्न में षष्टेश बुध राहु एक साथ होकर लग्नेश शनि से किसी प्रकार का संबंध करे तो जातक नपुंसक होता है।

27. मकरलग्न में सप्तम भाव में कर्क या मंगल हो तो स्त्री स्वेच्छाचारिणी होती है तथा विषय-भोग में अधैर्यशाली होती है।

28. मकरलग्न में पाप ग्रह से दृष्ट चंद्रमा एवं शुक्र कहीं भी बैठे हो तो ऐसी स्त्री व्याभिचारिणी होती है।

29. मकरलग्न में सप्तम भाव में शनि एवं मंगल, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री उत्तम कुल में जन्म लेने पर भी पति को त्याग कर व्याभिचारिणी बन जाती है अथवा विधवा भी हो सकती है।

30. मकरलग्न में चंद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशि में हो तो ऐसी महिला अत्यन्त कोमल एवं मृदुस्वभाव वाली होती है।

31. मकरलग्न में गुरु, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदुषी, सच्चरित्र वाली सभ्य महिला होती है।

32. मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा यदि चरराशि (1/4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरन्तर प्रवास में रहता है।

33. मकरलग्न में चंद्रमा व शुक्र लग्नस्थ, पाप ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री माता सहित परपुरुष गामिनी होती है।

34. मकरलग्न में चंद्रमा और शुक्र लग्नस्थ हो तथा पंचम भाव पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी नारी वन्ध्या होती है।

35. मकरलग्न में सूर्य अष्टम में सिंह राशि का स्वगृही हो तो ऐसी कन्या बांझ होती है।

36. मकरलग्न में लग्नस्थ शनि के साथ अष्टमेश सूर्य हो तो "द्विभार्या योग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

37. मकरलग्न में बुध, शुक्र और शनि ये तीनों ग्रह यदि दशम भाव में हो तो ऐसी पुरुष व्याभिचारी होता है।

38. मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो पूर्ण 'व्याभिचारी योग' बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

39. मकरलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के नवमांशे में हो तो ऐसे पुरुष की पत्नी कर्कश व झगड़ालू होती है। जिससे जातक से स्वयं दु:खी हो जाता है।

40. मकरलग्न में यदि पंचमेश शुक्र छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो ऐसे व्यक्ति का विवाह वृद्धावस्था में होता है।

41. मकरलग्न में सूर्य सातवें हो तो ऐसे पुरुष की पत्नी अल्पजीवी होती है।

❑❑❑

मकरलग्न एवं संतान योग

1. मकरलग्न में चंद्रमा वृष का पंचम भ[redacted] में हो तो जातक के एक पुत्र होता है।
2. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र आठवे हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
3. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र अस्त हो, पापपीड़ित या पाप ग्रह होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
4. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र लग्न (मकर राशि) में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. मकरलग्न में मंगल हो, पंचम स्थान में सूर्य एवं शनि आठवें हो तो जातक की जवानी बीत जाने के बाद बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
6. मकरलग्न में शनि हो, गुरु आठवें एवं मंगल बारहवें हो तो जातक की जवानी बीत जाने के बाद बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
7. मकरलग्न में ग्यारहवें चंद्रमा वृश्चिक राशि का हो तथा गुरु से पांचवें स्थान में पाप ग्रह हो लग्न में भी पाप ग्रह तो जातक की जवानी बीत जाने के बाद बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
8. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र लग्न में हो एवं लग्नेश शनि पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद में लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
9. मकरलग्न में पंचम भाव में वृष राशि होने से, यदि अन्य कोई दुर्योग न हो तो विवाहोपरान्त जातक के शीघ्र संतति होती है।
10. मकरलग्न के पंचमभाव में शुक्र हो तो जातक के छः कन्याएं होती हैं।
11. मकरलग्न में सूर्य+चंद्रमा हो तथा मंगल राहु व शनि से युत हो तो ऐसे व्यक्ति को माता के शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
12. मकरलग्न में सूर्य हो तथा सूर्य पापग्रस्त, पापपीड़ित या पाप ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को कुल देवता के शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

13. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं।
14. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र कमजोर हो तथा राहु ग्यारहवें हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान होती है।
15. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
16. मकरलग्न में लग्नेश शनि द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश शुक्र पापग्रस्त या पापपीड़ित हो तो ऐसे जातक के पुत्र संतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं।
17. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र बारहवें शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे जातक के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।
18. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
19. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र की सप्तमेश चंद्र के साथ युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
20. स्त्री को जन्म-कुण्डली हो तथा मकरलग्न हो और लग्न में सूर्य मंगल हो तो वह स्त्री विधवा होती है। राहु या केतु हो तो संतान का नाश, शनि हो तो दरिद्र होती है।
21. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
22. पंचमेश शुक्र निर्बल हो, लग्नेश शनि भी निर्बल हो, पंचम भाव में राहु हो तो सर्पदोष के कारण जातक के संतान नहीं होती।
23. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हो तो पद्मनामक ''कालसर्प योग'' के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।
24. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
25. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलती।

26. मकरलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलती।

27. तीन केन्द्रों में पापग्रह हो तो व्यक्ति को ''इलाख्य नामक'' सर्प योग बनता है। इस दोष के कारण जातक के पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

28. मकरलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

29. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वां संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

30. जिस स्त्री के जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होता।

31. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

32. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

33. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र संतान नहीं होता।

❑❑❑

मकरलग्न और राजयोग

1. यदि मकरलग्न अपने पूर्णांश पर हो और उच्चांश पर उच्च का मंगल बैठा हो, साथ ही उच्च का सूर्य चतुर्थ में, उच्च का बृहस्पति सप्तम में, उच्च का शनि दशम स्थान में बैठा हो तो या इन चारों में से कोई भी तीन ग्रह उच्च के बैठे हों तो राजयोग कारक होते हैं। तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. इनके अतिरिक्त यदि उच्च का मंगल लग्न में हो, उच्च का सूर्य चतुर्थ में और स्वगृही कर्क का चंद्रमा सप्तम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. दो ग्रह उच्च के केन्द्र में हो और साथ ही स्वगृही चंद्रमा सप्तम में हो तो राजयोग होता है तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का मंगल लग्न में हो और स्वगृही चंद्र से दृष्ट हो या मकर का स्वगृही शनि लग्न में हो, मेष का स्वगृही मंगल चतुर्थ में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. कर्क का स्वगृही चंद्रमा सप्तम में हो और तुला का स्वगृही शुक्र दशम में हो तो या इन चारों के साथ यदि मिथुन का स्वगृही बुध छठे स्थान में और सिंह का स्वगृही सूर्य अष्टम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. मकर का स्वगृही शनि बृहस्पति के साथ लग्न में हो, मीन का चंद्रमा तीसरे स्थान में हो, उच्च का बुध नवम स्थान में हो तथा मंगल वृश्चिक का एकादश स्थान में या वृश्चिक का शुक्र एकादश में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. दो ग्रह उच्च के दो ग्रह स्वगृही केन्द्र या त्रिकोण में हो तो या तीन ग्रह उच्च के एक ग्रह स्वगृही केन्द्र त्रिकोण में हो तो या तीन ग्रह स्वगृही के साथ एक

ग्रह उच्च का केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

8. यदि लग्नगत मकर राशि में स्वगृही शनि हो, मीन का चंद्रमा तीसरे भाव में हो, मिथुन का मंगल छठे भाव में हो, उच्च या कन्या का बुध भाग्य स्थान में हो और धन का बृहस्पति द्वादश भाव में हो तो मनुष्य बड़ा की गुणवान तथा कीर्तिवान मनुष्य राजा के समान होता है।
9. यदि मकरलग्न हो और लग्नेश शनि उच्च या तुला का होकर राज्य स्थान में चंद्रमा से युक्त बैठा हो तो मनुष्य 10 वर्ष की अवस्था में बड़ी पदवी प्राप्त करता है। राज्य कर्मचारी होते हुए भी धन-धन्यपूर्ण ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।
10. यदि मकरलग्न में मंगल शनि, दशम स्थान में तुला का शुक्र तथा धन का सूर्य और चंद्रमा द्वादश स्थान में हो, तो मनुष्य बड़ी सरकारी नौकरी में होता है।
11. यदि मकर का शनि लग्न में, कर्क का सूर्य चंद्रमा सप्तम में, वृश्चिक का मंगल एकादश स्थान में, सिंह का शुक्र अष्टम में और उच्च का बुध, गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य बहुत ही बड़ा आदमी होता है।
12. लग्न अथवा चंद्र लग्न से गुरु यदि केन्द्र में हो उस पर मात्र शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, गुरु अस्त, नीच, शत्रु राशि में न हो तो जातक मुख्यमंत्री बनता है।
13. शनि दशम भाव में उच्च का हो, बुध, गुरु, शुक्र व सूर्य, चंद्रादि 1, 4, 7, 10वें केन्द्रस्थ भावों में हो व्यक्ति उच्च शासनाधिकारी होता है।
14. लग्नेश पंचम में व पंचमेश लग्न में हो, आत्मकारक व पुत्रकारक दोनों लग्न या पंचम में हो, अपने उच्च, राशि या नवांश में तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक राज्यपाल या मुख्यमंत्री अवश्य होता है।
15. पंचमेश, लग्नेश, तृतीयेश, चतुर्थेश, षष्ठेश, सप्तमेश, नवमेश व द्वादशेश के साथ हो तो जातक व्यापारी भी और जमींदार भी होता है अर्थात् उच्च पदाधिकारी भी।
16. बुध स्व का उच्च का नवम भाव में हो, केतु व बुध की युति हो, गुरु की बुध-केतु पर पूर्ण दृष्टि हो तो जातक उच्च पदाधिकारी होता है।
17. चंद्रमा मेष राशि में स्थित हो और गुरु द्वारा दृष्ट हो तो वह व्यक्ति अनेक नौकरों-चाकरों से युक्त, धनाढ्य व मंत्री या सेनापति होता है।
18. अष्टम स्थान में गुरु व शुक्र हो, सप्तम में कर्क राशि में बुध हो, सूर्य लग्न

से सप्तम, चंद्रमा लग्न से पंचम और शनि लग्न से 11वें स्थान में हो तो जातक गुण सम्पन्न एवं उच्च पदाधिकारी होता है।

19. तृतीय स्थान में मीन का चंद्रमा हो, छठे मंगल, 9 भाव में बुध व द्वादश भाव में गुरु हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

20. लग्न में शनि हो, 4, 7, 8, 9, 10 के स्वामी उन-उन भावों में स्वगृही हो अर्थात मेष का मंगल, कर्क का चंद्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध व तुला का शुक्र तो उत्तम राजयोग बनता है।

21. गुरु लग्न में हो व शुक्र तुला राशि में स्वगृही हो तथा लग्नेश शुक्र की युति हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है तथा धनाढ्य होता है।

22. मकरलग्न में जन्मकाल में लग्न से दशम स्थान में शनि हो तो धनवान्, शूरवीर, मंत्री, दण्ड देने वाला (अर्थात् जज वगैरह) एक गांव या गावों के समूह का नेता होता है।

23. मकरलग्न में उच्च का बृहस्पति और मंगल तथा मेष लग्न में मंगल और गुरु हो, तो राजयोग होता है।

24. मकरलग्न में चंद्रमा लाभस्थान में शुक्र, गुरु के साथ और मंगल उच्च का मकर राशि के शनि के साथ हो और लग्न में कन्या का बुध हो तो बहुत विद्वान् होकर राजयोग होता है।

25. मकरलग्न में स्वराशि में पूर्ण चंद्रमा लग्न में, सप्तम में, बुध षष्ठ में, सूर्य चतुर्थ में, शुक्र दशम में, गुरु और शनि मंगल तृतीय स्थान में हो तो वैभव संपन्न राजयोग होता है।

26. मकर का शनि लग्न में, मीन का चंद्रमा, मिथुन का मंगल, धन का गुरु हो तो कीर्तिमान राजयोग होता है।

27. मकरलग्न में मंगल, सप्तम में पूर्ण चंद्रमा हो तो शत्रुओं से विजय प्राप्त करने वाला और वेदशास्त्र को जानने वाला ऐसा राजयोग होता है।

❑❑❑

लग्नवाराही

आचार्य वराहमिहिर ने जन्मलग्न में ग्रहों की स्थिति पर कुछ फलादेश संकेत रूप में चिह्नित किये हैं। प्रबुद्ध पाठकों को इन बिन्दुओं पर भी ध्यान देना चाहिए। अतः मूल संस्कृत श्लोकों सहित 'लग्नवाराही' यहां प्रस्तुत की जा रही है।।

प्रथमभावफलम्–

लग्नस्थितोऽत्र दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम्।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखरोगं
जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः॥1॥

यस्या बलेन भुवनं सृजते विधाता, यस्या बलेन भुवनम्परिपाति चक्री।
यस्या बलेन भुवनं हरते पिनाकी साऽऽद्या सदा विशतु नो मनसेप्सितं यत्॥1॥

जन्मलग्न में सूर्य हो तो शरीर में पीड़ा, मंगल हो तो रक्त विकार तथा शनि हो तो अनेक प्रकार का दुःख और गुरु, चंद्रमा, शुक्र तथा बुध हों तो सुख-सौन्दर्य देते हैं।।1।।

द्वितीयभावफलम्–

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा
वित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः॥2॥

सूर्य, शनि और मंगल यदि जन्मलग्न से दूसरे स्थान में हों तो अनेक प्रकार के दुखः तथा धन का नाश करते हैं तथा चंद्रमा, बुध, गुरु अथवा शुक्र दूसरे भाव में हों तो अनेक प्रकार से धन की वृद्धि करते हैं।।2।।

तृतीयभावफलम्–

भानुः करोति विरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम्।
सिद्धिर्बुधः सुधिषणं च सुनीतिप्रज्ञं
स्त्रीणां प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये॥3॥

जन्मलग्न से तीसरे भाव में सूर्य हो तो सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है, चंद्रमा हो तो जातक यशस्वी होता है और मंगल कोपाधिक्य तथा बुध सिद्धि देता है। बृहस्पति, शुक्र एवं शनि यदि लग्न में तीसरे भाव में हों तो जातक अच्छी बुद्धि वाला तथा नीतिशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियों का प्रिय होता है॥3॥

चतुर्थभावफलम्–

आद्रित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्म विफलं निहिताश्चतुर्थे।
सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं नृपयशः कुरुते प्रवृद्धिम्॥4॥

जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हो तो सुखरहित शरीर वाला तथा निष्फल जन्म वाला होता है और चंद्रमा, बुध, गुरु अथवा शुक्र हो तो जातक सुख से युक्त, राजा से कीर्तिलाभ प्राप्त करने वाला तथा जातक के धन की वृद्धि होती है॥4॥

पंचमभावफलम्–

कोपान्वितं प्रकुरुते तपनश्च पुत्रं
निस्सन्ततिं च विधुजः कुसुतं कुजार्की।
शुक्रेन्दुदेवगुरुवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुधियं सुरूपम्॥5॥

जिसके लग्न से पंचम स्थान में सूर्य हो उसका पुत्र क्रोधी होता है और बुध हो तो पुत्ररहित होता है। मंगल और शनि हो तो दुष्ट स्वभाव वाला पुत्र होता है, शुक्र, चंद्रमा और बृहस्पति हो तो सुंदर एवं बुद्धिमान बहुत पुत्र होते हैं॥5॥

षष्ठभावफलम्–

मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं
मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम्।

शुक्रो बुधो हि कुमतिं सरुजं च जीव-
श्चन्द्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम्॥6॥

जन्मलग्न से षष्ट स्थान में सूर्य और मंगल हों तो शत्रुपक्ष का नाश होता है, शनि हो तो जातक राजमान्य होती है और षष्ठ भाव में शुक्र, बुध हों तो जातक दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा गुरु हो तो रोगी और चंद्रमा हो तो मनुष्य का प्रयत्न विफल होता है, अतएव जातक सदा ही विकल रहता है॥6॥

सप्तमभावफलम्–

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां
रूपान्वितां जनमनोहरशीलरूपाम्॥7॥

यदि जन्मलग्न में सातवें स्थान में सूर्य, भौम और शनि हों तो उसकी स्त्री आचारभ्रष्टा तथा थोड़ी संतान वाली होती है और गुरु, चंद्रमा, शुक्र, बुध सातवें भाव में हों तो जातक की स्त्री बहुत संतान वाली तथा अत्यंत सुन्दरी, सबको अपने गुणों से प्रसन्न करने वाली तथा सुशीला होती है॥7॥

अष्टमभावफलम्–

सर्वे ग्रहाः दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम्।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं
बुद्धया विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्॥8॥

सूर्यादि नव ग्रहों में से कोई भी जन्मलग्न के आठवें भाव में हो तो प्राणी दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा उसके किसी भी अंग में शस्त्राभिघात होता है और जातक बुद्धिहीन तथा अनेक रोगों से युक्त होता है॥8॥

नवमभावफलम्–

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मनिधनं जनयन्ति पापम्।
चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानधिषणं कुरुते मनुष्यम्॥9॥

रवि, शनि और मंगल जन्मलग्न में नवम स्थान में हों तो धर्म का नाश तथा पाप की उत्पति करते हैं; चंद्रमा, बुध, शुक्र, गुरु यदि नवम स्थान में हो तो मनुष्य की बुद्धि प्रधान रूप से धर्मकार्य में रहती है॥9॥

दशमभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्य्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम्।
चंद्रश्च कीर्त्तिमुशना बहुपुत्रयुक्तं
कुर्यात् सुकर्मनिरतं विधुजो गुरुश्च॥10॥

सूर्य, मंगल और शनि, यदि दशम भाव में हों तो मनुष्य कुत्सित कर्म करने वाला तथा दरिद्र होता है, चंद्रमा हो तो कीर्तिवान्, शुक्र हो तो बहुत पुत्र वाला तथा बुध और गुरु हों तो अच्छे कार्यों में निरत रहता है॥10॥

एकादशभावफलम्–

लाभस्थितो दिनपतिर्नृपलाभकारी
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजश्च नारीः।
सौम्यो विवेकसहितं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति भवनं रविजः सुकान्तिम्॥11॥

एकादश भाव में सूर्य हो तो राजा से लाभ, चंद्र हो तो बहुत धन, मंगल हो तो स्त्री सुख, बुध हो तो उत्तम विवेक, बृहस्पति हो तो सौभाग्य, शुक्र हो तो धनयुक्त और शनि हो तो अच्छी कान्ति देते हैं॥11॥

द्वादशभावफलम्–

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशालं
काणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम्।
चन्द्रात्मजः प्रकुरुते निधनं धनानां
जीवः कृशं शनिकवी निजराज्यनाशम्॥12॥

यदि सूर्य जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह पुरुष विशाल शरीर वाला होता है और चंद्रमा हो तो काना और मंगल हो तो बहुत पाप करने वाला, बुध हो तो धन का नाश करने वाला, गुरु हो तो कृश शरीर तथा शनि और शुक्र व्यय भाव में हों तो अपने राज्य का नाश करने वाला होता है॥12॥

स्त्री जातक की कुण्डली

प्रथमभावफलम्–

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम्।

शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुष्मतीं प्रकुरुते च विभावरीशः॥1॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न में सूर्य या मंगल हो वह विधवा, राहु हो तो मृतवत्सा, शनि हो तो दरिद्रा और शुक्र, बुध, गुरु में से कोई हो तो अच्छी स्वभाव वाली पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो दीर्घायु होती है॥1॥

द्वितीयभावफलम्–

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमाः
दारिद्रयदुःखमतुलं निहिताः द्वितीये।
वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्क॥2॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न से दूसरे स्थान में सूर्य, शनि, राहु और मंगल हो तो वह स्त्री दुःख दारिद्रय से युक्त और गुरु, शुक्र, बुध हों तो धनवती तथा भाग्यवती और चंद्रमा दूसरे भाव में हो तो बहुत पुत्रों से युक्त होती है॥2॥

तृतीयभावफलम्–

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्यबुधास्तृतीये
कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च।
कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां
पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः॥3॥

जिस स्त्री की कुंडली के तृतीय भाव में शुक्र, चंद्रमा, भौम, गुरु, सूर्य, बुध इन ग्रहों में से कोई भी हो तो वह स्त्री पतिव्रता, बहुत पुत्रों से युक्त और धन का भोग करने वाली होती है और जिस कन्या के जन्मलग्न में तृतीय भाव में शनि हो तो वह अति धनवती और राहु हो तो पुष्ट शरीर वाली होती है॥3॥

चतुर्थभावफलम्–

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुतौ चतुर्थे
सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशाङ्कः।
राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं
दद्याद् बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम्॥4॥

जिस स्त्री की कुंडली में मंगल और शनि, चतुर्थ भाव में हों तो व अल्प दुग्ध देने वाली, चंद्रमा हो तो सौभाग्य शील से रहित, राहु हो तो सपत्नी से युक्त, बुध हो तो धन-भूमि का लाभ करने वाली और बृहस्पति तथा शुक्र हो तो सौख्यवती होती है।

पंचमभावफलम्–

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च।
राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं
कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशाङ्क॥5॥

स्त्री के पंचम भाव में सूर्य अथवा मंगल हो तो उसकी संतति मर जाती है, यदि बुध, गुरु, शुक्र हों तो वह पुत्र-पुत्रियों से युक्त होती है एवं पंचम भाव में राहु से मरण, शनि से रोग तथा चंद्रमा से बहुत कन्याएं होती हैं॥5॥

षष्ठभावफलम्–

षष्ठे शनैश्चरबुधा रविराहुजीवा:
भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च।
चंद्र करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियां च॥6॥

स्त्री के षष्ठ भाव में शनि, बुध, सूर्य, राहु, गुरु और मंगल इन ग्रहों में से कोई हो तो वह सौभाग्यवती, पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा तथा वेश्या और बुध हो तो कलह करने वाली होती है॥6॥

सप्तमभावफलम्–

सूर्यः क्षितीन्दुसुतजीवशनीन्दुशुक्राः
दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः।
वैधव्यबन्धनमृतिं किल वित्तनाशं
व्याधिं विदेशगमनं च यथाक्रमेण॥7॥

स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि, चंद्रमा, शुक्र हो तो क्रम से मरण, वैधव्य, बन्धन, धननाश, रोग, विदेश-गमन ये फल देते हैं॥7॥

अष्टमभावफलम्–

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ निहितौ वियोगं
मृत्युं शशाङ्कभृगुजौ च तथैव राहुः।
सूर्यः करोति विधवां सुभगां महीजः
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च॥8॥

स्त्री के जन्मलग्न में अष्टम स्थान में गुरु और बुध हों तो पति से वियोग, चंद्रमा, शुक्र और राहु हों तो मरण, सूर्य हो तो वैधव्य, मंगल हो तो सौभाग्य, शनि हो तो वह स्त्री बहुत संतानवाली तथा पति-प्रिया होती है।।8।।

नवमभावफलम्–

चन्द्रात्मजो भृगुदिवाकरदेवपूज्या

धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम्।

भौमो रुजं च खलु सूर्यसुतश्च रण्डां

नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः।।9।।

जिस स्त्री के नवम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य, गुरु इनमें से कोई हो तो वह धर्म में निष्ठा रखने वाली, भौम के रहने से रोगी तथा शनि होने से विधवा और चंद्रमा होने से बहुत संतान वाली होती है।।9।।

दशमभावफलम्–

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात्

पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च।

मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चन्द्रः

शेषाः ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः।।10।।

जिस स्त्री के दशम भाव में राहु हो वह विधवा; सूर्य, शनि हो तो पापकर्म करने वाली तथा मंगल हो तो अल्पायु, चंद्रमा हो तो धन रहित तथा कुलटा और शेष ग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) यदि जन्म लग्न से दशम भाव में दशम भाव में हों तो वह स्त्री धनवती तथा सौभाग्यवती होती है।।10।।

एकादशभावफलम्–

आये स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रां

पुत्रीमतीं च महिजोऽर्थवतीं हि चंद्रः।

आयुष्मतीं सुरगुरुश्च तथैव सौम्यो

राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम्।।11।।

स्त्री के एकादश भाव में सूर्य हो तो अच्छे पुत्र वाली, मंगल हो तो कन्या वाली चंद्रमा हो तो धन वाली होती है। ग्यारहवें भाव में गुरु अथवा बुध हो तो दीर्घायु, राहु हो तो विधवा और शुक्र हो तो वह स्त्री धनवती होती है।।11।।

द्वादशभावफलम्–

अन्ते गुरुर्हि विधवां दिनकृद् दरिद्रां
चन्द्रो धनव्ययकरां कुलटां च राहुः।
साध्वीं तथा भृगुबुधौ बहुपुत्रपौत्रां
प्राणेशसक्तहृदयां सुहृदां कुजश्च॥12॥

जिस स्त्री में जन्मलग्न से द्वादश स्थान में गुरु हो वह विधवा, सूर्य हो तो दरिद्रा, चंद्रमा हो तो धन का अधिक खर्च करने वाली, राहु हो तो व्यभिचारिणी, शुक्र तथा बुध हो तो सच्चरित्रा और मंगल हो तो बहुत पुत्र-पौत्रों से युक्त, पति से प्रेम करने वाली तथा सुशीला होती है।।12।।

अन्ययोगाः

लग्ने शौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।
कर्मस्थाने भवेद् भौमो राजयोगस्तदा भवेत्॥1॥

लग्न में शनि और चंद्रमा हो, त्रिकोण अर्थात् नवम-पंचम स्थान में बृहस्पति तथा सूर्य हों और दशम भाव में मंगल हो तो राजयोग देता है।।1।।

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदि।
तस्यः भ्राता न जीवेत एकाकी हि भवेच्च सः॥2॥

यदि अपनी राशि का होकर सूर्य नवम भाव में हो तो जातक का भाई नहीं जीता है और वह एकाकी ही रहता है।।2।।

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे रविराहू यदा गतौ।
भौमशुक्रबुधैर्युक्तौ क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः॥3॥

यदि रवि और राहु अपने गृह के होकर कर्म भाव में हों और भौम, शुक्र, बुध से युक्त हों तो क्षण ही में जातक का धन वृद्धि तथा ह्रास को प्राप्त होता है।।3।।

लग्ने क्रूरे व्यये क्रूरे धने सौम्ये तथैव च।
सप्तमे भवने क्रूरे परिवारक्षयंकरः॥4॥

लग्न, द्वादश तथा सप्तम भवों में पाप ग्रह हों और दूसरे भावों में शुभ ग्रह हों तो परिवार का नाश करने वाला होता है।।4।।

षष्ठे [redacted] भवने सोमः सप्तमे राहुसम्भवः।
अष्टमे च यदा शौरिर्भार्या तस्य न जीवति॥5॥

जिसके षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो जातक की स्त्री नहीं जीती है।।5।।

लग्नस्थाने यदा शौरी रिपुस्थाने च चंद्रमाः।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति।।6।।

यदि जन्मलग्न में शनि, षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम भाव में मंगल हो तो जातक का पिता नहीं जीता है।।6।।

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रोऽथ वा शशी।
सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति राजमान्यो भवेन्नरः।।7।।

जिसके दशम भाव में बृहस्पति, बुध, शुक्र या चंद्रमा हो जातक के सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा वह राज्यमान्य होता है।।7।।

कुंभे शौरिर्धने सूर्यो मेषे भवति चंद्रमाः।
मकरे च यदा शुक्रः स भुङ्क्ते पैतृकं धनम्।।8।।

कुंभ राशि में शनि, धन भाव में सूर्य, मेष राशि में चंद्रमा और मकर राशि में शुक्र हो तो जातक पिता के धन का भोग करने वाला होता है।।8।।

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति।।9।।

जिसके केन्द्र स्थान में शुक्र, बुध, बृहस्पति न हों और दशम भाव में मंगल न हो तो वह मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।।9।।

त्रिभिः स्वगृहगैर्मन्त्री त्रिभिरुच्चगतैर्नृपः।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्निरर्थकः।।10।।

जन्म समय में 3 ग्रह स्वराशि के हों तो मंत्री, 3 ग्रह उच्च के हों तो राजा, 3 ग्रह नीच के हों तो दास और 3 ग्रह अस्त के हों तो निरर्थक होता है।।10।।

लग्ने शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको यस्य स जातः कुलदीपकः।।11।।

जिसके लग्न में शुक्र-बुध और केन्द्र स्थान में बृहस्पति, दशम भाव में मंगल हो वह पुरुष कुल को प्रकाशित करने वाला होता है।।11।।

आदौ जीवः सितः प्रान्ते अन्ये मध्ये निरन्तरम्।
राजयोगं विजानीयात् स्वकुटुम्बविवर्धनः।।12।।

लग्न में गुरु, द्वादश में शुक्र और शेष ग्रह मध्य में निरन्तर (लगातार) हों तो राजयोग होता है और वह मनुष्य अपने कुटुम्ब को बढ़ाने वाला होता है।

क्रूराश्चतुर्थके लग्नात् यदि क्रूरा धनेषु च।
दरिद्रयोगं जानीयात् पितृपक्षक्षयङ्करः॥13॥

लग्न से चतुर्थ और द्वितीय भाव में पाप ग्रह हों तो दरिद्र योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पिता के कुल का नाश करने वाला होता है॥13॥

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत्।
राहुश्च सहजस्थाने तस्य माता न जीवति॥14॥

लग्न में गुरु, धनभाव में शनि तथा तीसरे स्थान में राहु हों तो उसकी माता शीघ्र मर जाती है॥14॥

सप्तमे भवने चंद्रो रवी राहुश्च मङ्गलः।
सप्तमे दिवसे मृत्युः सप्तमासे न संशयः॥15॥

जन्मलग्न से सप्तम भाव में चंद्रमा, सूर्य, राहु और मंगल हों तो जातक सात ही दिन में अथवा सात मास में ही अवश्य ही मर जाता है॥15॥

उच्चस्थाने यदा भौमो रविराहुसमन्वितः।
तीव्रपीडा भवेत्तस्यं स्वस्थानेनैव तिष्ठति॥16॥

जन्मकाल में उच्च राशि का मंगल सूर्य और राहु के साथ हो तो जातक के शरीर में बड़ी पीड़ा होती है और वह अपने स्थान में नहीं रहता है॥16॥

क्रूरक्षेत्रे गते जीवे रविराहुधरासुते।
सप्तमे भवने शुक्रे देहे कष्टं भवेदिति॥17॥

यदि रवि, राहु, मंगल और बृहस्पति क्रूर ग्रह (6/8/12) में हो और सप्तम भाव में शुक्र हो तो शरीर में कष्ट होता है॥17॥

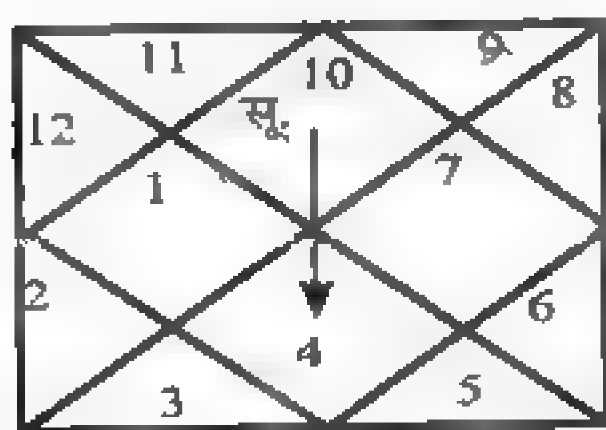
स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधाशौरी तथैव च।
यस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पदस्तु पदे पदे॥18॥

यदि गुरु, बुध, शनि, अपने गृह में हों तो जातक को दीर्घायु और पद-पद में धन संपत्ति देने वाला होता है॥18॥

❑❑❑

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। प्रथम स्थान में मकर राशि का सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः स्वास्थ्य व सौन्दर्य में कुछ कमी रहेगी। फिर भी जातक तेजस्वी, ओजस्वी, सत्यवक्ता एवं न्यायप्रिय होता है। जातक की अपने पिता से विचारधारा कम मिलेगी। जातक के जीवन में गुप्त शत्रुओं की बहुतायत रहेगी।

दृष्टि—लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः स्त्री पक्ष से हल्का-सा विरोधाभास होते हुए भी गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा।

निशानी—जातक की स्त्री रूपवती, सुन्दर एवं आकर्षक देहयष्टि वाली होगी।

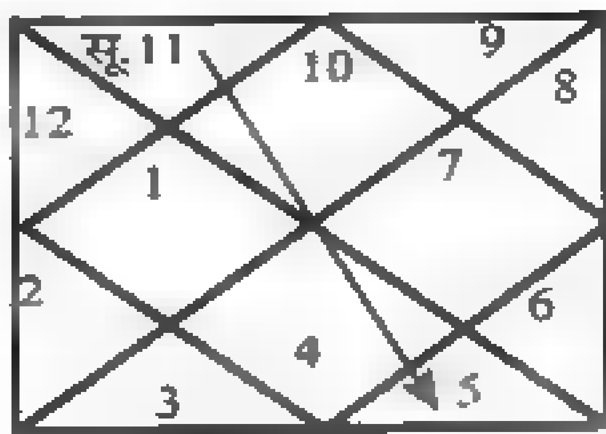
दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में मान-सम्मान की वृद्धि होगी। यश मिलेगा पर दुर्घटना का भय बना रहेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के) मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक विकल अंगों वाला एवं विचलित मन-मस्तिष्क वाला होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से '**रुचक योग**' बनेगा। ऐसा जातक निश्चित रूप से राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। प्रथम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की भाग्येश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक बुद्धिमान एवं तेजस्वी होगा। अपने पराक्रम से रुपया कमायेगा। यहां पर यह युति ज्यादा खिलेगी नहीं फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु नीच का होगा। जातक को कर्णदोष एवं नेत्र पीड़ा होने की संभावना अधिक रहेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक '**कुल का दीपक**' एवं राज सुख प्राप्त करने का अधिकारी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होकर '**शश योग**' बनायेगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति लग्न स्थान में विस्फोटक है। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। परन्तु व्यक्तित्व विकास हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक के व्यक्तित्व को बिगाड़ेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को परेशानियां देगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। द्वितीय स्थान में सूर्य कुंभ राशि में शत्रु क्षेत्री होगा। ऐसा जातक धन का संचय नहीं कर पाता। जातक को कुटुम्ब सुख में भी कठिनाइयां प्राप्त होंगी। ऐसा जातक दिखावे के लिए विलासिता पूर्ण जीवन जीयेगा। जातक की वाणी गंभीर, अप्रिय तथा अनिष्ट सूचक होगी।

दृष्टि–द्वितीय भावगत सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव अपने ही घर (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु लम्बी होगी।

निशानी–पाराशर ऋषि के अनुसार '**नष्टं वित्तं न लभ्यते**' ऐसे जातक के हाथ से जो वस्तु खो जायेगी, वो वापस नहीं मिलेगी। उधार दिया हुआ धन डूब जायेगा।

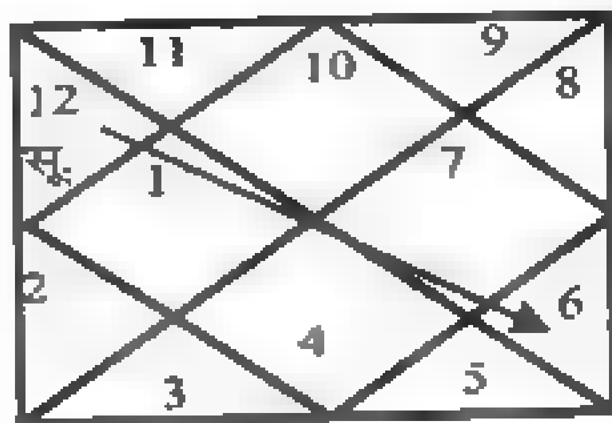
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति धन स्थान में, धन-हानि करायेगी। पत्नी की बीमारी में जातक रुपया खर्च होगा। दाम्पत्य जीवन का सुख नष्ट होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से जातक का धन भूमि संबंधी कार्यों में खर्च होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वितीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे, जो सूर्य का ही घर है। जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा। जातक की आमदनी के जरिए एक से अधिक प्रकार के रहेंगे। जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होगी। जातक दीर्घजीवी होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक धर्मप्रधान व्यक्ति होगा तथा धार्मिक वाणी बोलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से सरकारी क्षेत्र से धन की प्राप्ति होगी। पर धनसंग्रह हेतु संघर्ष बना रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्वगृही होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति धन स्थान में विस्फोटक है। धन संग्रह में बाधाएं आयेंगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु धन संग्रह में भारी कष्ट का संकेतक है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु आर्थिक विषमताएं देगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार



सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। तृतीय स्थान में सूर्य मीन (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक अत्यधिक पुरुषार्थी तथा पराक्रमी होता है। जातक शत्रुहन्ता एवं भाग्यशाली होता है। जातक के नौकर एवं मित्र अति विश्वास योग्य नहीं होते।

दृष्टि—तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।

निशानी—ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता। पर मित्रों से लाभ होता है।

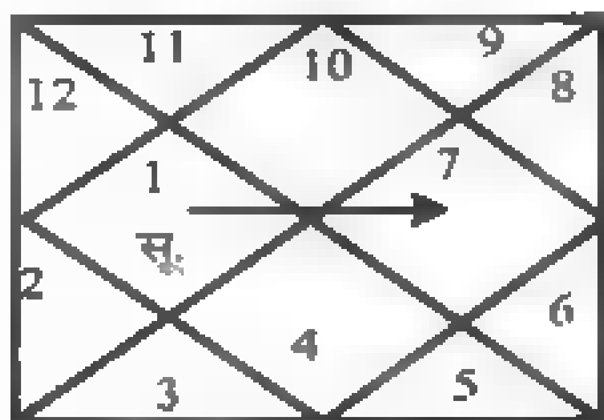
दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा। भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति पराक्रम स्थान में होने से छोटे भाई का सुख नहीं प्राप्त होगा। भाई-बहनों में मनमुटाव रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से जातक के चार भाई होंगे।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। तृतीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च राशि होगी। फलतः जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा। परिजन एवं इष्टमित्रों की मदद जीवन में मिलती रहेगी। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होना शुरू होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु स्वगृही होगा। जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा। पर भाइयों से बनेगी नहीं।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र उच्च का होगा। जातक को मित्रों-रिश्तेदारों से लाभ होता रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि सम राशि में है। अष्टमेश व द्वितीयेश यह युति पराक्रम स्थान में विस्फोटक है। परिवार में कलह-विवाद बना रहेगा। मित्र अविश्वासनीय होंगे। छोटे-बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं होगा।

7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु भाइयों में कोर्ट-केस करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु परिजनों में विवाद करायेगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यहां चतुर्थ स्थान में सूर्य उच्च का होगा। मेष के अंशों में सूर्य परमोच्च का होता है। अपनी राशि से नवमें स्थान पर होने के कारण सूर्य यहां शुभ फलदायक है। **'रविकृत राजयोग'** के कारण जातक आध्यात्मिक शक्ति से युक्त, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीता है। जातक पढ़ा-लिखा होगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

दृष्टि—चतुर्थ भाव स्थित सूर्य की दृष्टि दशम स्थान तुला राशि पर होगी। ऐसा जातक राजकीय प्रभुत्व सम्पन्न राजपुरुष होता है।

निशानी—ऐसे जातक के पास बड़ा मकान होता है। जिसके दरवाजे भी बड़े-बड़े होंगे।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

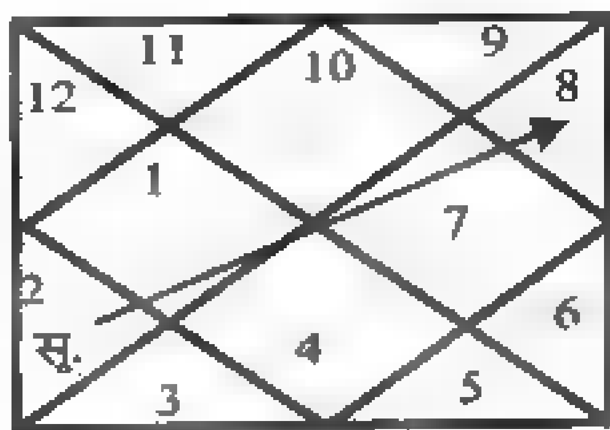
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 12 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति मेष राशि (उच्च के सूर्य) में होने से **'रविकृत राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से **'किम्बहुना योग'** बनेगा। जातक निश्चित रुप से राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। उसके पास उत्तम वाहन व एकाधिक उत्तम भवन होंगे।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। चतुर्थ स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध

के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। सूर्य के कारण '**रविकृत राजयोग**' तथा बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बनेगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। राज (सरकार) से लाभ उठायेगा तथा उत्तम वाहन एवं मकान सुख को प्राप्त करता हुआ समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति कहलायेगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य एवं बृहस्पति की युति जातक को मित्रों से लाभ दिलायेगी। जातक धनवान व दयावान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र उत्तम वाहन एवं मकान का सुख देगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहां उच्च का होकर '**रविकृत राजयोग**' तो शनि यहां नीच का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बना रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की चतुर्थ स्थान में यह युति जातक के माता-पिता के सुख को नष्ट करके राजयोग देगी। जातक महाधनी, बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा गांव का प्रमुख होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु माता-पिता के सुख में कमी दिलायेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु मां को बीमार करायेगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। पंचम स्थान में सूर्य वृष (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को विद्याध्ययन में प्रारंभिक रुकावटों के बाद सफलता मिलेगी। जातक धनी एवं क्रोधी स्वभाव का होगा पर लम्बी उम्र का स्वामी होगा। संतान पक्ष में थोड़ा कष्ट संभव है।

दृष्टि—पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को लाभ प्राप्ति हेतु विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

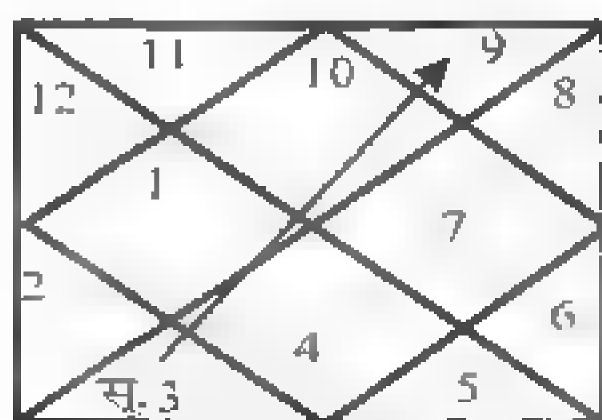
निशानी—जातक के पुत्र थोड़े होते हैं। संतान उत्पत्ति में विलम्ब, एकाध गर्भपात होगा। संभवतः प्रथम कन्या होगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में उन्नति होगी। शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र युति पंचम स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति संतान भाव में होने से ज्येष्ठ संतति का नाश करायेगी। जातक को कन्या संतति अधिक होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल की युति पुत्र संतान की उत्पत्ति से जातक की किस्मत चमकायेगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। पंचम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, शिक्षित व प्रज्ञावान होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। एक-दो गर्भपात होंगे। जातक व्यापार प्रिय तथा समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक धर्मध्वज, गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र स्वगृही होगा। जातक राज सरकार में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों वृष राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्रक्षेत्री होगा। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति पंचम स्थान में विस्फोटक है। विद्या प्राप्ति में बाधा। प्रथम संतति हाथ नहीं लगेगी। संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु होने से संतान प्राप्ति में बाधा, विद्या में रुकावट आयेगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति विद्याध्यन में बाधक है।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। छठे स्थान में सूर्य मिथुन (मित्र) राशि में होगा। सूर्य की यह स्थिति सरल नामक '**विपरीत**

राजयोग' की सृष्टि करेगी। फलतः जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम सामर्थ्यवान होगा। ऐसे जातक के शरीर में कुछ-न-कुछ रोग होने की संभावना प्रबल रहेगी।

दृष्टि—षष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि द्वादश स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक का खर्च अधिक रहता है। नेत्र पीड़ा संभव है।

निशानी—ऐसा जातक आर्थिक, सामाजिक, पारावारिक एवं राजनैतिक दृष्टि से सुदृढ़ होता है। ऐसे जातक को बाल्यवस्था में सर्प और जल का भय रहेगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा तथा ऊंच पद को प्राप्त करेगा।

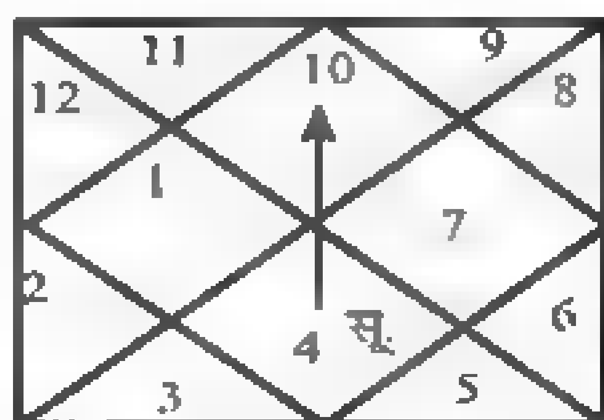
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध--

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 8 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर होने से **'विवाहभंग योग'** एवं सरलनामक **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनी-मानी होगा परन्तु उसका विवाह विलम्ब से होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। व्यापार में नुकसान की संभावना प्रबल रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकर लग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। छठे स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां स्वगृही होगा तथा खर्च स्थान को देखेगा। षष्टेश षष्टम भाव में हो तो **'हर्ष योग'** बनता है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का जड़मूल से नाश करने में सक्षम होता है। अष्टमेश के छठे स्थान पर जाने से **'सरल योग'** की सृष्टि होती है। इससे जातक रोग से लड़ने में सक्षम होकर दीर्घजीवी होता है। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली, धनवान, भाग्यशाली होता है। समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति **'पराक्रमभंग योग'** एवं विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक के मित्र दगाबाज होंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र प्रारम्भिक विद्या प्राप्ति में बाधक है। जातक को संतान संबंधी चिंता।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में होने सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। जबकि शनि मित्रक्षेत्री होकर

'**लग्नभंग योग**', '**धनहीन योग**' बना रहा है। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति छठे भाव में विस्फोटक है। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा पर अचानक शत्रु प्रकोप से जातक का धनबल, शरीबल नष्ट हो जायेगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु दायें पांव की हड्डी तोड़ेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु दायें पांव में चोट पहुंचायेगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। फिर भी ऐसे जातक का दैनिक जीवन तनाव व संघर्षों से भरा होता है। गृहस्थ सुख में कुछ परेशानी रहती है। जातक व्यक्तिगत जीवन में महत्वाकांक्षी होता है। ऐसा जातक अल्प प्रयत्न से, कई बार ऊंचाइयों की बुलन्दियों को छू लेता है। जातक सभ्य, सत्यवक्ता होगा तथा आध्यात्मिक व सिद्धान्तवादी जीवन जीयेगा।

दृष्टि–सप्तम भावस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न भाव पर होगी। ऐसे जातक को कठोर परिश्रम का मीठा फल मिलता है।

निशानी–पाराशर ऋषि के अनुसार अष्टमेश सूर्य यदि सप्तम भाव में हो तो प्राय: जातक को दो पत्नियां होती हैं।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 6 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां चंद्रमा के कारण '**यामिनीनाथ योग**' बनेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा। पत्नी सुन्दर होगी पर ससुराल से मनमुटाव रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल नीच का होगा। जातक धनवान होगा। ऐसा जातक पुराने मकान में रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। सातवें स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टमेश+भाग्येश

बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। उसका विवाह शीघ्र होगा। जातक धनवान होगा। उसके प्रयत्न निष्फल नहीं जायेंगे। जातक समाज का अग्रगण्य, लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब-कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति उच्च का होगा। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख मिलेगा। पत्नी पतिव्रता होगी। मित्रों से लाभ है।

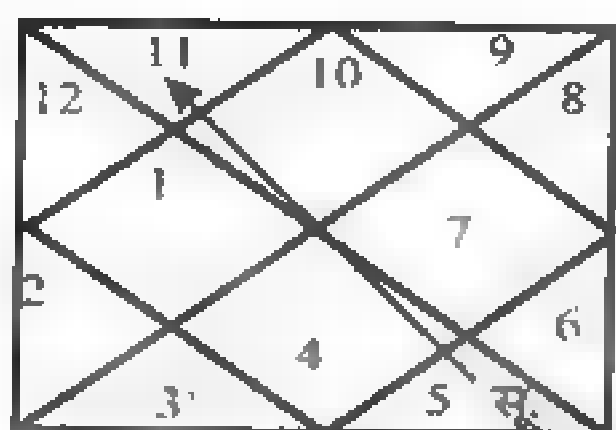
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र होने के कारण जातक की पत्नी सुन्दर व कामुक होगी। दोनों के परस्पर अहम् का टकराव होता रहेगा।

6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति सप्तम स्थान में विस्फोटक है। विलम्ब विवाह, पत्नी से वियोग एवं गृहस्थ सुख में अशांति कलह का वातावरण रहेगा। पत्नी विकल अंगों वाली हो सकती है।

7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक को विधुर बनायेगा। जातक की पत्नी की मृत्यु जातक के सामने होगी।

8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक के जीवनसाथी को दीर्घकालिक बीमारी देगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। अष्टम स्थान में सूर्य स्वगृही होगा। सूर्य की यह स्थिति सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** की सृष्टि करेगी। ऐसा जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। जातक साहसी, दृढ़ निश्चयी एवं पराक्रमी होगा। ऐसा व्यक्ति दीर्घजीवी होगा तथा ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। ऐसे जातक को धन संचय एवं कुटुम्ब सुख को लेकर परेशानी उठानी पड़ेगी।

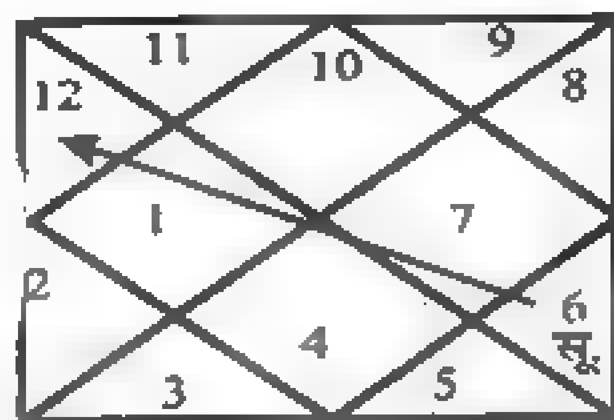
निशानी—जातक पर निन्दक होगा तथा दूसरों की आलोचना करने में अत्यधिक रुचि रखेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की सायं 6 से 4 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहां पर **'विवाहभंग योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगी। फलत: जातक धनी-मानी होगा पर उसके विवाह में विलम्ब होगा। गृहस्थ सुख में परेशानी रहेगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को माता-पिता का सुख कमजोर रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। अष्टम स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश के आठवें जाने से **'हर्ष योग'** बना। जिसके कारण व्यक्ति शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा। अष्टमेश के स्वगृही होकर अष्टम स्थान में बैठने से **'सरल योग'** बनता है। इस कारण जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होती है। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति **'पराक्रमभंग योग'** बनायेगा। जातक धनी होगा पर समाज में उसकी इज्जत नहीं होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा से दण्डित होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होकर सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है जबकि शनि शत्रु क्षेत्री होकर **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बना रहा है। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति अष्टम भाव में विस्फोटक है। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा पर अचानक दुर्घटना में जातक का धनबल, शरीरबल नष्ट हो जायेगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **द्विभार्या योग** बनायेगा। अचानक दुर्घटना, अपघात का भय रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु बायें पैर के लिए घातक है। पैरों में चोट पहुंचेगी।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यहां नवम स्थान में सूर्य कन्या (मित्र) राशि में होगा। पितृ सुख एवं भाग्य की उन्नति में कुछ रुकावट महसूस होगी। ऐसा जातक पराये धन का हरण करने में दक्ष होता है पर पिता की सम्पत्ति में विवाद होता है। जातक धर्म के मामले में संदेहास्पद विचारों वाला होगा।

दृष्टि—नवमस्थ सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा पर उनमें कुछ मनोमालिन्यता रहेगी।

निशानी—ऐसा जातक कुछ नास्तिक होगा। परम्परागत मान्यताओं [redacted] अंधविश्वासों पर आंख मूंद कर विश्वास नहीं करता।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

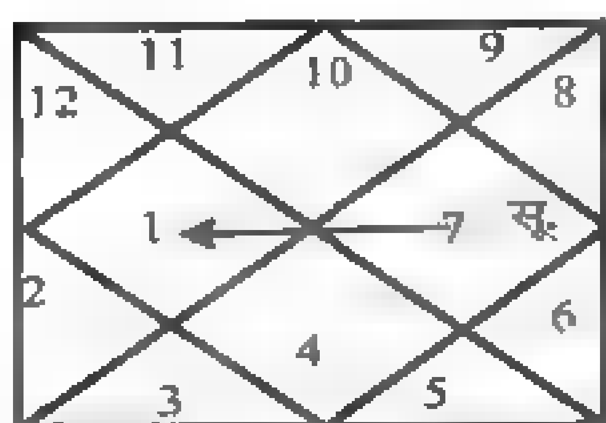
सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 4 से 2 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहां भाग्योदय में बाधक है। विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। नवम् स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश, सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। यहां पर बुध उच्च राशि का होगा। फलतः ऐसा जातक प्रबल भाग्यशाली होगा, राजा के समान महान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु भाइयों में लाभ, मित्रों से लाभ दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र जातक को राज-सरकार में ऊंचा पद दिलायेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में तो शनि

मित्र राशि में है। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति भाग्य स्थान में विस्फोटक है। जातक के जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी एवं वास्तविक भाग्योदय हेतु निरन्तर संघर्ष बना रहेगा। भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक का भाग्योदय में बाधक है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक का भाग्योदय में विलम्ब करायेगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। सूर्य यहां दशम भाव में नीच का होगा। तुला राशि का सूर्य परम नीच का होता है। जातक के पिता को घोर कष्ट होगा। तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। फलतः ऐसा जातक प्रायः व्यापार में धनार्जन करता है। सूर्य यहां 'दिग्बली' होगा। फलतः जातक को परिश्रम व संघर्ष के बाद धन, यश, प्रतिष्ठा व पद की प्राप्ति होती है।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

निशानी–ऐसा जातक चुगलखोर होता है तथा दूसरों की निन्दा करने में रुचि रखता है। जातक के पास वाहन सुख उपलब्ध रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में रोजी, रोजगार, व्यवसाय की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दसवें स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां सूर्य नीच का होगा। जातक को सरकारी नौकरी में बाधा आयेगी पर उसकी पत्नी कमायेगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल के 'दिक्बली' होने से जातक ग्राम या शहर का मुखिया होगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। दशम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां नीच का होगा। '**कुलदीपक योग**' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक उत्तम वाहन का स्वामी होगा उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति भाइयों से धन लाभ, मित्रों से फायदा दिलायेगा।

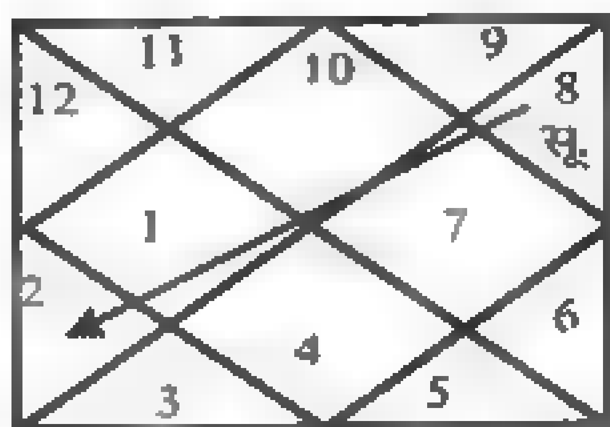
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं विद्यावान होगा। विद्या एवं हुनर से जातक का नाम चमकेगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहां नीच का तो शनि नीच का होने से 'नीचभंग योग' बना। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की युति दशम भाव में विस्फोटक है। नौकरी में बाधा, राजदण्ड एवं झूठी बदनामी का योग है।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु राज-सरकार से अवमानना, असहयोग की स्थिति उत्पन्न करेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु राजदण्ड दिलायेगा। कोर्ट-केस में जातक की पराजय होगी।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य की यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। एकादश स्थान में सूर्य वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को अच्छी व्यवसाय, व्यापार से धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। जातक के स्वभाव में तेजी व उग्रता रहेगी। जातक को आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति के प्रति असंतोष रहता है।

दृष्टि–एकादश भाव स्थित सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में रुकावट आयेगी।

निशानी–ऐसा जातक बाल्य अवस्था में दु:खी फिर सुखी होता है। जातक को प्राय: संतान का अभाव होता है। संतान (पुत्र) सुख ईश्वर कृपा, धार्मिक अनुष्ठान से मिलेगा।

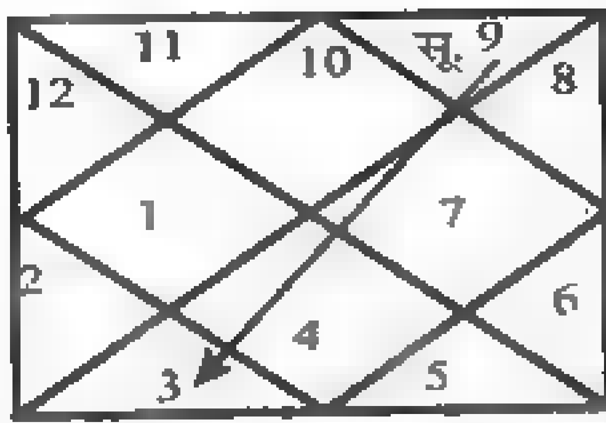
दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या को दिन में 12 से 10 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां चंद्रमा नीच का होगा। लाभ में बाधा भागीदारों में वैमनस्य रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। एकादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा। व्यापारी वर्गीय होगा। व्यापार द्वारा प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेगा। जातक शिक्षित होगा। जातक की संतति भी शिक्षित होगी। जातक समाज का अग्रगण्य व लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को पराक्रमी तथा धर्म प्रिय बनायेगा। पुत्र लाभ देगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को उच्च शिक्षा, उच्च पद व प्रतिष्ठा दिलायेगा। जातक को स्त्री-पुरुष दोनों संतति का लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो, शनि यहां शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति एकादश स्थान में विस्फोटक है। व्यापार-व्यवसाय में बाधा, लाभ में रुकावट, भागीदारी में नुकसान होगा। पिता की मृत्यु के बाद जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु व्यापारिक लाभ की बनिस्बत हानि करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु धन प्राप्ति में बाधक है।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार



सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। द्वादश स्थान में सूर्य धनु (मित्र) राशि में होगा। सूर्य की इस स्थिति से सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** की सृष्टि होगी। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा।' ऐसा जातक स्वभाव में घमण्डी दिखाई देगा। इसके कारण उसके शत्रु बहुत होंगे, जो उसे परेशान करते रहेंगे।

दृष्टि—द्वादशभावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव पर होगी। फलतः जातक अपने ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—ऐसे जातक का पैसा गलत कार्य में खर्च होता है। धन, यश व प्रतिष्ठा की हानि होती है। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी। ऋण, रोग व शत्रु परेशान करेंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः 10 से 8 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर **'विवाहभंग योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगी। ऐसा जातक धनी-मानी होगा। पर विवाह में विलम्ब होगा व नेत्र पीड़ा रहेगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल **'सुखहीन योग'**, **'लाभभंग योग'** के साथ विलम्ब विवाह करायेगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वादश स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश बुध के बारहवें स्थान पर होने से **'हर्ष योग'** बनेगा। फलतः जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अष्टमेश सूर्य के बारहवें जाने से **'सरल योग'** बनेगा जो कि जातक को रोग से लड़ने की शक्ति व सामर्थ्य देगा तथा जातक दीर्घजीवी होगा। जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को धनवान बनायेगा पर जातक धार्मिक कार्य, समाज सेवा व परोपकार में रुपया खर्च करेगा।

5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र संतति प्राप्ति में बाधक है। राजा से दण्ड भी संभव है।

6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री होकर सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है। तो शनि सम क्षेत्री होकर '**लग्नभंग योग**' व '**धनहीन योग**' की सृष्टि कर रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति द्वादश भाव में विस्फोटक है। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा पर उसे यात्रा से धन हानि, शरीर हानि एवं नेत्र पीड़ा होगी।

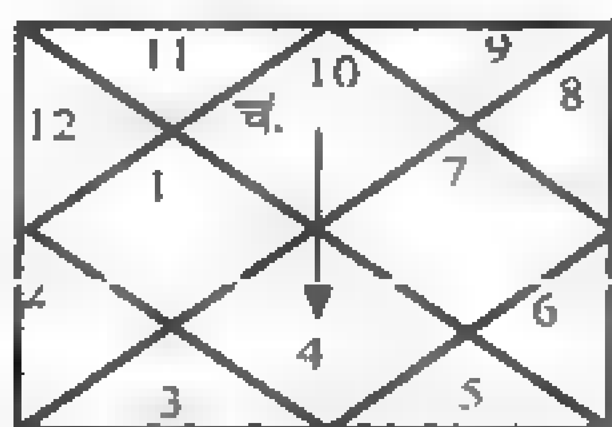
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु राजदण्ड, यात्रा में हानि, दुर्घटना का संकेत देता है।

8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु दुःस्वप्न लायेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। चंद्रमा यहां प्रथम स्थान में मकर (शत्रु) राशि में होगा। जातक सुन्दर, विनोदी, विनम्र, चंचल स्वभाव वाला होगा। जातक कल्पनाशील होगा तथा परम्परगत मान्यताओं में विश्वास नहीं रखेगा। जातक विद्यावान (Educational Degree Holder) होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर है। फलतः जातक की पत्नी हृष्ट-पुष्ट, गदराये बदन वाली सुन्दर स्त्री होगी।

निशानी–जातक ज्यादा बोलने वाला होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक साबित होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से [illegible] के) मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक विकल अंगों वाला एवं विचलित मन-मस्तिष्क वाला होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि में मंगल उच्च का होगा तथा यहां **'रुचक योग'** बनेगा। फलतः **'महालक्ष्मी योग'** बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव (मेष राशि), सप्तम भाव (कर्क

राशि) एवं अष्टम भाव (सिंह राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा। जातक को शानदार भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक का भाग्योदय सही अर्थों में विवाह के बाद होगा।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मकर राशि' में होगी। यह युति वस्तुत सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां नीच राशि में होगा। लग्नस्थ दोनों ग्रह क्रमशः '**कुलदीपक योग**', '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि करते हुए पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक की गणना समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी।

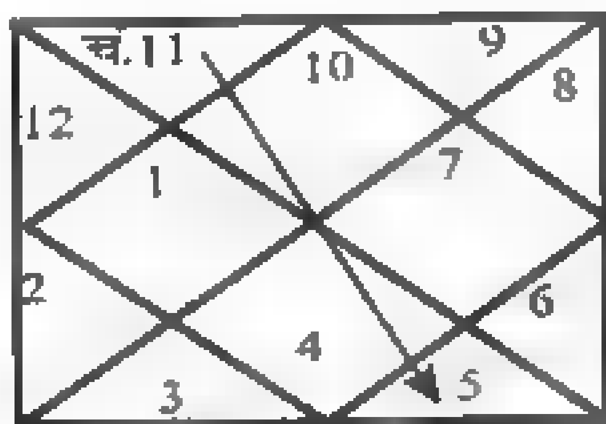
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को रंगीन मिजाज का व्यक्ति बनायेगा। जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु होने से जातक की पत्नी उम्र में उससे बड़ी होगी।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु कीर्तिदायक है।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। द्वितीय स्थान में चंद्रमा कुंभ (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक धनी होगा। स्वयं की पत्नी एवं अन्य स्त्रियों द्वारा धन लाभ होता रहेगा। जातक मिष्टभाषी, सौम्य, शिष्ट और विनम्र होगा। जातक को कुटुम्ब का सुख, धन-प्रतिष्ठा, पद, लाभ बराबर मिलता रहेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

निशानी–जातक दीर्घसूत्री एवं कामक्रीड़ा में स्त्री को परास्त करेगा। विवाह के बाद जातक धनी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। इस दशा में जातक धन कमायेगा एवं गृहस्थ सुख को भोगेगा।

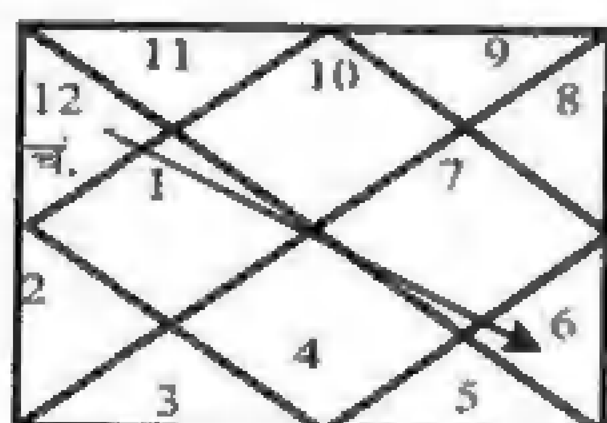
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति धन स्थान में, धन-हानि करायेगी। पत्नी की बीमारी में रुपया खर्च होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (वृष राशि), भाग्य भाव (सिंह राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान व सौभाग्यशाली होगा। उसका राजनीति (सरकार) में दबदबा होगा। जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को धनवान बनायेगा। जातक की वाणी विनम्र एवं मीठी होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपक जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'कुंभ राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होगा। उसे राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। यह योग जातक के लिए 60% शुभ फलदायक है।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के शुक्र विवाह के बाद जातक को ऊंची नौकरी दिलायेगा। जातक की संतति भाग्यशाली होगी।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ स्वगृही शनि होने से जातक **'महाधनी'** होगा। यहां **'कलत्रमूल धनयोग'** के कारण जातक को ससुराल से धन मिलेगा। जातक की पत्नी भी धनी घराने से होगी।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु धन संग्रह में बाधक है तथा पति-पत्नी के परस्पर प्रेम में बाधक है।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु आर्थिक विषमताएं उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा मीन राशि में होगा। चंद्रमा अपनी राशि से नवम स्थान पर होने से शुभ है। जातक भाग्यशाली होगा। उसे पिता, सहोदर एवं पत्नी का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक साहसी व पराक्रमी होगा। जातक साहित्य प्रेमी होगा। उसकी व्यवसायिक उन्नति होगी।

दृष्टि—तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली, धर्मभीरु तथा विद्वान होगा एवं पिता की प्रिय होगा।

निशानी—जातक ठंडे दिमाग का होगा क्योंकि चंद्रमा जल तत्व प्रधान है, मीन राशि भी जल तत्व वाली है। अतः ऐसा जातक झगड़े-टंटे, कलह-विवाद में रुचि नहीं रखेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी। जातक का पराक्रम बढ़ायेगी एवं उसका भाग्योदय भी करायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति पराक्रम स्थान में होने से जातक को छोटे भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। भाई-बहनों में मनमुटाव रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टम् स्थान (मिथुन राशि), भाग्य भवन (कन्या राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक का राजनीति (सरकार), कोर्ट-कचहरी में वर्चस्व रहेगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक का शीघ्र विवाह करायेगा एवं विवाह के बाद जातक का भाग्योदय भी शीघ्र होगा।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के तृतीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगी। यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां बृहस्पति स्वगृही होगा। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक के मित्र, परिजन जातक के सहायक होंगे। जातक महान पराक्रमी होगा।

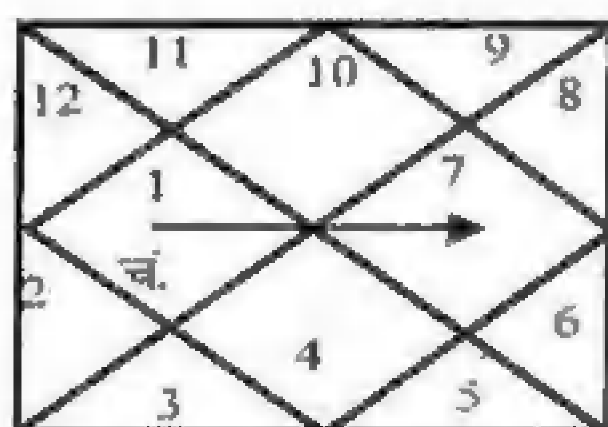
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ उच्च का शुक्र जातक को परम पराक्रमी बनायेगा। जातक की बहनें अधिक होंगी तथा उसे स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक अपने परिश्रम से स्वयं को खूब धनी व प्रसिद्ध व्यक्ति बनायेगा।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु होने से जातक के परिजनों में विद्वेष जातक के ससुराल के कारण होगा।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु शत-प्रतिशत कीर्तिदायक साबित होगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा मेष (मित्र) राशि में होगा। यह चंद्रमा अपनी राशि से दसवें स्थान पर होने से शुभ फलदाई है। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख, जमीन-जायदाद, वाहन का सुख पूर्ण मिलेगा। जातक को स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक धनवान होगा एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा। जातक यशस्वी होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को रोजी-रोजगार की तकलीफ नहीं आयेगी। व्यापार अच्छा चलेगा।

निशानी—महर्षि पाराशर के अनुसार ऐसे जातक की पत्नी जातक के वश (कहने) में नहीं रहती। चंद्रमा उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा–अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को भौतिक सुखों-संसाधनों की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की चतुर्थ स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति मेष राशि (उच्च के सूर्य) में होने से '**रविकृत राजयोग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही होने से '**रुचक योग**' बनेगा एवं '**महालक्ष्मी योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (कर्क राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा व व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। विवाह के बाद जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा। जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को माता की सम्पत्ति दिलायेगा, परन्तु उनमें थोड़ी-सी मनोमालिन्यता रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मेष राशि' में होगी। यहां यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यह युति केन्द्रवर्ती होने के कारण '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का धन शुभ कार्य, परोपकार के कार्यों में खर्च होगा। जातक का दुर्घटनाओं व संकट से बचाव होता रहेगा। जातक को कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र की युति माता के सुख में वृद्धि कारक है। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि भले ही नीच का हो पर वाहन सुख देगा। जातक की माता बचपन में गुजर जायेगी।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु की युति माता की लम्बी आयु में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु माता के सुख में न्यूनता देगा।